TITLE CODE : UPMUL00792

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

वर्ष :2, अंक :06 पृष्ठ :8, मूल्य 2 रुपये

शाहजहाँपुर, मंगलवार 28 मार्च 2023

शाहजहाँपुर से प्रकाशित

6 वर्ष 6 दिन उ.प्र. के अच्छे दिन

लोक पहल

शाहजहांपुर। देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ की सरकार के दोनो कार्यकाल मिलाकर 25 मार्च को 6 वर्ष 6 दिन पूर्ण हुए है। यह कहना बिल्कुल भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इन 6 वर्ष 6 दिन में उत्तर प्रदेश के अच्छे दिन जरूर आये हैं। सरकार के कामकाज का यदि निष्पक्षता से आंकलन किया जाये तो योगी सरकार अपनी

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे व बुंदेलखण्ड एक्सप्रेसवे का संचालन, गंगा एक्सप्रेस वे का निर्माण आरंभ

प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने में कामयाब रही है। अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और युवाओं को रोजगार देने की दिशा में सरकार ने सार्थक कदम उठाएं। देश में मोदी सरकार की दूरगामी दृष्टि से प्रेरणा लेते हुए योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए एक समग्र योजना की अवधारणा और इसके क्रियान्वयन की व्यापक रणनीति तैयार की है। विकास मे बुनियादी ढांचे के महत्व को जानते हुए राज्य सरकार ने इस क्षेत्र में विशेष काम किया है। आर्थिक विकास को गति प्रदान के लिए विभिन्न परियोजनाओं को अमलीजामा पहनाया गया। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार ने आज एक बेहतर माहौल बनाया है और प्रदेश में कानून का राज माना जा सकता है। इसी का परिणाम है कि यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के आयोजन ने निवेश की अपार संभावनाएं पैदा की हैं। समिट में 32.92 लाख करोड़ के निवेश के प्रस्ताव आए हैं जिनमें लगभग 17 लाख नए रोजगार सृजन होने की संभावना है। विदेश के बड़े उद्यमियों का उत्तर प्रदेश में निवेश के लिए आना इस बात का संकेत है कि लोग योगी सरकार पर भरोसा कर रहे है। योगी आदित्यनाथ प्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री बने जिन्होंने लगातार दो बार इतने दिनों तक सरकार चलाई। उन्होंने माफिया और अपराधियों के खिलाफ अभियान चलाकर प्रदेश में कानून का राज कायम करने का काम किया है।

यदि योगी सरकार की 6 वर्ष 6 दिन की उपलब्धियों की बात की जाये तो सरकार सुशासन, विकास और रोजगार के मुद्दों पर खरी उतरती दिखाई दे रही है। उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना में 52.50 लाख आवास निर्मित किए वहीं 2.60 करोड़ किसानों को 52,190 करोड़ रूपए पीएम किसान निधि से दिलाने का काम किया। 2.61 करोड़ व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण, 1.75 करोड़ परिवारो को उज्जवला योजना का लाभ दिलाने के साथ ही होली दिवाली पर एक–एक निशुल्क सिलेण्डर भी गरीब परिवारों को दिया गया। स्कूल चलो अभियान के तहत 1.92 करोड़ बच्चों का

70 नये राज्य मार्ग तथा 57 नये जिला मार्ग घोषित तहसील ब्लाक मुख्यालयों को 2 लेन से जोड़ने के लिए धनराशि का आवंटन

नामांकन कर उन्हें शिक्षित करने का बीड़ा सरकार ने उठाया है साथ ही बच्चो को पाठ्य पुस्तकें, युनिफार्म, स्वेटर, जूते, मोजे व स्कूल बैग का वितरण भी किया गया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश सरकार ने तीन राज्य विश्वविद्यालय व 78 राजकीय महाविद्यालयों तथा 15 निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना हेतु आशय पत्र निर्गत किये गये है। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत 2.26 लाख युवाओं का विवाह कराया गया। साथ ही 1,21,324 मजरों का विद्युतीकरण व 1.58 करोड़ घरों को निशुल्क बिजली कनेक्शन देने का काम प्रदेश की योगी सरकार ने किया है। आयुष्मान भारत तथा मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना में 8.90 करोड़ लाभार्थियों को 5 लाख का बीमा कराने के साथ ही 4,720 एम्बुलेंस का संचालन भी किया जा रहा है। प्रदेश में 40 करोड़ से अधिक लोगों का कोविड टीकाकरण कराकर सरकार ने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण शहरों के निर्माण के लिए उत्तर प्रदेश में 17 शहरों स्मार्ट सिटी परियोजना में शामिल किया गया। शिक्षा, खेल और रोजगार के विकास के लिए नई खेल नीति 20–23 के तहत 172 राजकीय महाविद्यालयों में स्पोर्ट्स इन्फ्रा के निर्माण तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 82 स्टेडियम बनाने का काम शुरू हुआ है। स्वदेशी वस्तुएं के प्रोत्साहन तथा रोजगार सृजन के उद्देश्य से मुख्यमंत्री माटीकला रोजगार योजना और मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना का शुभारंभ किया गया है। जिसके तहत अब तक करीब पांच हजार इकाईयों की स्थापना हुई है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 6 वर्ष 6 दिन के कार्यकाल में विकास को प्राथमिकता देने के साथ ही दलित, शोषित और वंचितों के

मनरेगा के अन्तर्गत 164.80 करोड़ मानव दिवस सृजित आंशिक दिव्यांगता पर 2 लाख की सहायता

उत्थान के लिए भी तमाम योजनाओं को शुरू किया गया है। 15 करोड़ पात्र लोगों को निशुल्क खाद्य सामग्री का वितरण कर सरकार ने सामाजिक कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है। माना जा रहा है कि उत्तर प्रदेश में अन्तिम व्यक्ति के उत्थान और कल्याण के संरक्षण और संबर्द्धन के उद्देश्य से सरकार विभिन्न योजनाओं को संचालित कर एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की ओर अग्रसर है जो लोकतंत्र में राजनीति के मूल उद्देश्य को परिभाषित करने का काम करेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 6 वर्ष 6 दिन के कार्यकाल में विकास को प्राथमिकता देने के साथ ही दलित, शोषित और वंचितों के उत्थान के लिए भी तमाम योजनाओं को शुरू किया गया है। 15 करोड़ पात्र लोगों को निशुल्क खाद्य सामग्री का वितरण कर सरकार ने सामाजिक कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है। माना जा रहा है कि उत्तर प्रदेश में अन्तिम व्यक्ति के उत्थान और कल्याण के संरक्षण और संबर्द्धन के उद्देश्य से सरकार विभिन्न योजनाओं को संचालित कर एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की ओर अग्रसर है जो लोकतंत्र में राजनीति के मूल उद्देश्य को परिभाषित करने का काम करेगा।

अध्यात्म और राजनीति के समन्वय पुरूष 'योगी आदित्यनाथ'

स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती

शाहजहांपुर। बात 19 मार्च 2017 की है जब योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री की शपथ ग्रहण करने की तैयारी में थे और वीवीआईपी गेस्ट हाउस लखनऊ के बाहर बाहरी भीड़ योगी योगी के नारे लगा रही थी। मैंने पहले भी कई मुख्यमंत्रियों और प्रधानमंत्रियों के शपथ ग्रहण देखे थे लेकिन जो उत्साह उस दिन मुझे लखनऊ में दिखाई दे रहा था उसे मैं कभी भूल नहीं सकता। धरती से लेकर आकाश तक लखनऊ का हर गली, कूचा और कोना योगी योगी के नारों से गूंज रहा था ऐसा लगता था जैसे कुंभ का मेला हो और पवित्र गंगा में स्नान करने के लिए लोग उमड़ रहे हो। हर चेहरे पर एक उल्लास दिख रहा था नौजवानों में जोश और समाज के सभी वर्ग के लोगों में खुशी की लहर अंगड़ाई ले रही थीं। मैं वीवीआईपी गेस्ट हाउस के बाहर खड़ा था आज तक के रिर्पोटर–पत्रकार ने मुझे खासतौर से यह समझकर कि योगी जी से वर्षो से मेरी निकटता रही है उनके बारे में कुछ खास बता सकूंगा। उसने पूछा कि योगी जी उ0प्र0 जैसे समस्याओं से जूझते पिछड़े और बदहाल, ध्वस्त कानून व्यवस्था के इस प्रदेश का नेतृत्व कैसे कर सकेंगे और जिस सुशासन की उम्मीद से प्रदेश की जनता ने उनके नेतृत्व को भारी बहुमत दिया है उसे वह कैसे पूरा करेंगे। क्योंकि उनके पास शासन का कोई अनुभव नहीं है, वे कई वर्षो से सांसद अवश्य है लेकिन कभी किसी सरकार में न तो मंत्री रहे है न पार्टी संगठन का ही कोई दायित्व निर्वाह किया है और न ही किसी आयोग आदि के संचालन का उन्हे अनुभव है। ऐसी स्थिति में जब वे प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तो उनके नवोदित नेतृत्व को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा क्या उसमें वे कामयाब होंगे। अटल बिहारी बाजपेयी से लेकर नरेन्द्र भाई मोदी के प्रशासनिक आदर्शो को क्या वे आत्मसात कर सकेंगे? क्या वह प्रदेश की बेरोजगारी, भुखमरी जर्जर अर्थव्यवस्था को ठीक कर सकेंगे? ये तमाम सारे सवाल मेरे सामने थे हालांकि वहां भारी भीड़ थी लेकिन उनके कार्य कुशलता का अनुभव उन तमाम लोगो में से शायद ही कुछ लोगों का रहा हो। निश्चित ही उन्होंने गोरखपुर के सांसद होने के नाते विकास के अनेको काम अपने क्षेत्र में कराये है लेकिन पूरे प्रदेश के लिए जिस कुशल नेतृत्व की आवश्यकता थी क्या वह उस कसौटी पर स्वयं को खरा साबित कर पाएंगे। दूर दूर तक उनके मन में केन्द्रीय या प्रदेश के किसी बड़े पद पर आने की ना लालसा थी न ऐसी कोई महत्वाकांक्षा। उनकी पहचान अपनी परंपरा के आदर्शो पर चलने और योग साधना के क्षेत्र में अभ्यास के अलावा कुछ भी तो नहीं था। यह अवश्य था कि वह एक ऐसे मठ के युवराज महंत थे जो सदियों से हिन्दुत्व की साधना और सामाजिक समरसता के लिए संघर्ष करता रहा है। जिस मठ के वह युवराज थे उसका किसी सत्ता से कभी कोई संबंध नहीं था। महंत दिग्विजयनाथ से लेकर महंत अवैधनाथ तक सभी सत्ता विराधी खेमे का नेतृत्व करते रहे। वे कभी गोरक्षा के लिए लड़े तो कभी देश व प्रदेश के सांस्कृतिक धरोहर और उसकी विरासत की रक्षा के लिए लड़ते दिखाई पड़े। अयोध्या में भगवान श्रीराम के मन्दिर और कांशी तथा मथुरा के धर्मस्थानों की मुक्ति का आग्रह निरन्तर इस मठ के पूज्य संतो में रहा है और इन्ही मुद्दों पर न केवल वह सत्ता से लड़ते रहे अपितु कई बार उनको इस संघर्ष की कीमत चुकानी पड़ी और जेल गये, डंडे लाठी खाये लेकिन कभी किसी मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री के दरवाजे पर अधिकार और सत्ता की भीख मांगते दिखाई नहीं पड़े। फिर अचानक प्रदेश के सत्ता की शिखर पर स्थापित होने जा रहे योगी को लेकर हर एक के मन में संशय था मुझे गोरखपुर मठ के विस्तृत कार्य क्षेत्र के संचालन और उसके प्रबंधन में योगी की दक्षता का साक्षात्कार कई बार हुआ था लेकिन जिस कुर्सी पर आजादी के बाद अब तक स्थापित मुख्यमंत्रियों के कार्यकाल को देखा जाए तो शायद ही कोई मुख्यमंत्री अपने सत्ता के पांच वर्ष पूरे कर सका हो और एक कार्यकाल को पूरी करके दूसरे में प्रवेश करने का अवसर शायद अब तक इनके पहले मुख्यमंत्री को नहीं मिला था। मठ प्रबंधन और मठ की संस्थाओं की देख रेख का अनुभव एक अलग चीज है क्योंकि वहां व्यवस्था की हर कठिनाई आस्था के धरती पर हल हो जाती लेकिन व्यवस्था की कठिनाई दूर करने के लिए जहां व्यवस्था ही विकल्प हो वहां एक योगी कितना सफल होगा यह सवाल उठना स्वाभाविक है। हिन्दुस्तान के इतिहास में इसके पहले किसी भी सन्यासी को सत्ता के लिए इतना बड़ा जन समर्थन कभी प्राप्त नहीं हुआ है, होने के लिए तो देश के कई प्रदेशों में कुछ लोग मंत्री बनते देखे गए लेकिन उत्तर प्रदेश जैसे भारी भरकम प्रदेश का नेतृत्व किसी योगी के बस का हो सकता है ऐसा सोचना भी कठिन था। लेकिन अब यह चुनौती योगी के सामने थी। यद्यपि उन्हें राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसे राष्ट्रवादी संगठन और विश्व हिन्दू परिषद जैसे संस्थाओं का समर्थन प्राप्त था। यद्यपि वह राम जन्म भूमि आन्दोलन के प्रत्यक्ष हिस्से कभी नहीं रहे लेकिन उनके पूर्वाचार्यो की दो पीढ़ियां इस आन्दोलन को समर्पित थी।

लेकिन आज 6 वर्षो के बाद 25 मार्च 2023 को देख रहा हूँ कि केवल उत्तर प्रदेश में अथवा भारत ही नहीं पूरे विश्व में आज योगी एक चर्चित व्यक्तित्व है। पक्ष और विपक्ष दोनों में उनकी चर्चा उनके विरोधी जहां उनको खुली चुनौती देते दिखाई दे रहे है वहीं उनके समर्थक उनके साथ अटूट चट्टान बनकर खड़े है। 6 वर्ष का उनका कार्यकाल उत्तर प्रदेश का अगर स्वर्णिम कहा जाये तो अन्यथा नहीं होगा। उन्होने न केवल प्रदेश को बल्कि देश की राजनीति से निराश हो रही जनता को एक भरोसा दिया है। लोगो के मन में एक विश्वास पैदा किया है। सुदूढ़ दक्षिणी प्रांतो में जहां के लोग उत्तर प्रदेश के किसी नेता का नेतृत्व स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। वहीं योगी के लिए दक्षिण के लोगों में भी एक दीवानगी दिखाई पड़ रही है। कुछ दिन पूर्व मैं अपनी आंख के इलाज के लिए हैदराबाद के प्रसिद्ध इंस्टीट्यूट जो केवल आंख के रोगों का इलाज करती है और विश्व में नेत्र चिकित्सा के लिए चर्चित है इलाज के लिए गया था। इलाज के दौरान एक तमिल महिला डाक्टर ने मुझसे पूछा बाबा आप कहा से आये है मैंने जब ये कहा कि हरिद्वार से आया हूँ तो उसका अगला सवाल था कि आप क्या योगी जी को जानते है। मेरे साथ के लोग उसके इस सवाल पर हंस पड़े। क्योंकि मेरे और योगी के संबंधों का डाक्टर को तो नहीं लेकिन मेरे साथ के लोगों को अच्छी तरह पता था मैंने कहा जी हां जानता हूँ वह हमारे उ0प्र0 के मुख्यमंत्री है आपको क्या कहना है। उस महिला डाक्टर ने कहा कि वह आपके मुख्यमंत्री हो सकते है लेकिन हम जैसे लोगों को उनका राजनीति से कोई लेना देना नहीं है और जो सत्ता के संघर्ष से सर्वथा दूर है और अपने वैज्ञानिक शोध मे व्यस्त हैं उन्हें आपके योगी में एक दैवी शक्ति दिखाई पड़ती है। अभी वह हैदराबाद आये थे निजाम मैदान में उनकी एक सभा थी हम डाक्टरों में से कुछ लोग केवल उनको देखने और सुनने के लिए गए थे भारी भीड़ में उनसे हम लोग बहुत दूर थे लेकिन उनकी आवाज हम लोगों के कानों तक पहुंच रही थी। बाबा वह भाषण नहीं कर रहे थे बल्कि उनका एक–एक शब्द मंत्र की तरह हम लोगो के कानों में गुदगुदी पैदा कर रहा था बहुत कम बोले लेकिन जो वह बोले वह उनके पहले भी कोई नहीं बोल सका था और न बाद में कोई बोल पायेगा। इसके बारे में भी हम कुछ नहीं कह सकते। जब उन्होने हैदराबाद को भाग्यनगर बनाने की घोषणा की तो सहसा हम लोगो के बदन में झुरझुरी सी पैदा हुई। हम हैदराबाद के लोग वर्षो से भाग्यलक्ष्मी की पूजा करते थे लेकिन नगर की इस अधिष्ठात्री देवी के नाम पर यह नगर हो सकता है उसकी कप्लना दूर दूर तक नहीं कर सकते थे। आज हम महसूस करते है कि सुदृढ़ दक्षिणी में बैठी हुई एक मुस्लिम महिला वैज्ञानिक को योगी में एक दैवी शक्ति दिखाई पड़ रही है तो उत्तर प्रदेश का हर आम आदमी उन्हें अगर देवता के रूप मे देखता है तो कुछ गलत नहीं है। उनको एक संप्रदाय विशेष के विरोध में खड़ा करने की कोशिश प्रदेश के प्रत्येक दल करते आ रहे है लेकिन अभी मैंने एक मुस्लिम महिला का बयान एक चैनल पर सुना तो मुझे लगा कि यह कुचक्र केवल विरोधियों का ही है और केवल अर्थहीन है अपितु भ्रामक और जनसाधारण में संशय पैदा करने वाला है। जब उस महिला से चैनल के पत्रकार ने पूछा कि योगी का बुल्डोजर आज संप्रदाय विशेष के लोगों के महलों को ध्वस्त कर हा है उनके घर उजाड़ रहा है ऐसी स्थति में योगी के बारे में आप क्या कहेंगे, तो उस महिला ने कहा कि योगी उनका घर उजाड़ रहे है जो अब तक हम गरीब परिवारों और लड़कियों का घर उजाड़ रहे थे इज्जत लूट रहे थे अधिकार और अवसर को मिट्टी मिला मिला रहे थे उनके खिलाफ जो कार्यवाही योगी जी ने की है वह उनके खिलाफ हो सकता है लेकिन हम लोगों के हक में है। आज हम महिला, सुरक्षित है, हमारा परिवार सुरक्षित है, हमारा धंधा और व्यापार सुरक्षित है और जब कोविड 19 के समय क्रूर काल में मेरे हाथ से रोजी रोटी, रोजगार छीन लिये गये थे खाने पीने के लिए कुछ नहीं था तब उन्होने ही मेरे माईबाप की तरह हम सबकी भूख की परवाह की और मुफ्त राशन का जो सिलसिला शुरू किया वह चलता चला आ रहा है। हमें रहने के लिए घर, नित्यक्रिया से मुक्ति होने के लिए शौचालय, रसोई के लिए उज्जवला गैस, पीने के लिए पानी और बीमार पड़ने पर मुफ्त इलाज का यह तोहफा दिया। वह आज तक कोई शासक को छोड़ दो नाते रिश्तेदार भी नहीं दे सकता । आज शिक्षा, रोजगार, सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि के क्षेत्र में हमें नए नए अवसर दिखाई पड़ रहे है और 24 घंटें में 21 घंटे योगी हमारे लिए समर्पित कर रहे है। फिर जनसाधारण की यह आवाज उत्तर प्रदेश में आजादी के बाद पहली बार सुनाई पड़ रही है। योगी का शासन हमारे लिए सुशासन नहीं बल्कि अल्लाह की नियामत है। ईश्वर का वरदान है योगी एक मनुष्य नहीं एक देवता है। जिनकी इस देश को जरूरत है। आज उनके 6 वर्ष और 6 दिन पूरे होने पर हम उनको बधाई देते है और विश्वास करते है कि उनके बढ़ते कदम एक दिन केवल प्रदेश के लिए ही नहीं बल्कि देश और विश्व के लिए भी आदर्श साबित होंगे। वास्तव में योगी आदित्यनाथ अध्यात्म और राजनीति के एक समन्वय पुरूष है।

भारत जी-20 के देशों के विकास के लिए संकल्पबद्धः डा. गरिमा अग्रवाल

एसएस कालेज के वाणिज्य विभाग में आयोजित हुआ अतिथि व्याख्यान

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय द्वारा 'जी 20 अध्यक्ष के रूप में वैश्विक विकास के प्रति भारत का दृष्टिकोण' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उप–प्राचार्य व वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो अनुराग अग्रवाल ने स्वामी शुकदेवानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर व पुष्पांजलि अर्पित कर किया। मुख्य वक्ता व बरेली कालेज की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ गरिमा अग्रवाल ने

कहा जी–20 के अध्यक्ष के रूप में भारत केवल अपने हितों के प्रति चिंतित नहीं है अपितु सभी सदस्य देशों के स्थाई विकास के लिए संकल्प बद्ध है। विकासशील देशों के लिए भारत का नेतृत्व उन्नति का एक महत्वपूर्ण अवसर लेकर आया है। भारत की आर्थिक नीति महामारी काल में भी अर्थव्यवस्था को गिरने से बचाने में सफल रही। भारत के इस अनुभव का लाभ सभी सदस्य देशों को मिलेगा। डा कमलेश गौतम के संचालन मे हुए कार्यक्रम में प्रो.अनुराग अग्रवाल, डा देवेंद्र सिंह, डा संतोष प्रताप सिंह और डा सचिन खन्ना ने भी अपने विचार रखे। अंत मे डा रूपक श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर प्रकाश वर्मा, ब्रजलाली, अपर्णा त्रिपाठी, यशपाल कश्यप, देव सिंह कुशवाहा, समेत बडी संख्या में छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

केन्द्रीय विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक में कई प्रस्तावों पर चर्चा

शाहजहांपुर। केंद्रीय विद्यालय कैंट की विद्यालय प्रबंध समिति की बैठक समिति के अध्यक्ष का कार्यभार संभाल रहे डिप्टी कमांडर एमपीएस मौर्य की अध्यक्षता में केंद्रीय विद्यालय के सभागार में संपन्न हुई। बैठक के दौरान विद्यालय के छात्र छात्राओं की सुविधाओं हेतु कई प्रस्ताव पारित किए गए। समिति के वरिष्ठ सदस्य डॉ. शरद राही ने विद्यालय में छात्र–छात्राओं के एडमिशन के लिए समिति सदस्यों के लिए कोटा निश्चित करने का प्रस्ताव रखा जिस पर संचालन कर रहे प्राचार्य रतन कुमार ने बताया कि अब छात्र छात्राओं के प्रवेश के लिए केंद्रीय विद्यालय संगठन ने सभी कोटे समाप्त कर दिए हैं जिस पर शरद राही ने कहा की उनका प्रस्ताव केंद्रीय विद्यालय संगठन को भेज दिया जाए। बैठक में सेना के एडीएम हेड क्वार्टर सुनील गोदियाल उपस्थित रहे। केंद्रीय विद्यालय कैंट के प्राचार्य रतन कुमार के संचालन में हुई बैठक में अध्यापक रिप्रेजेंटेटिव संजय श्रीवास्तव, जीएफ कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मोहम्मद तारिक, डॉ. शरद राही, गौरी अंसारी, वरुण, संदीप सेधना असिस्टेंट इंजीनियर सिविल आदि मौजूद रहे।

योगी सरकार के 6 वर्ष 6 दिन शाहजहांपुर के अच्छे दिन

बदलते शाहजहांपुर की बदलती तस्वीर

सुयश सिन्हा

शाहजहांपुर। योगी सरकार के दूसरे कार्यकाल को मिलाकर 25 मार्च 2023 को 6 वर्ष 6 दिन हो गए हैं इतने दिनों में शहीदों की धरा शाहजहांपुर में प्रदेश की योगी सरकार ने तमाम विकास की परियोजनाओं को शुरू करके नए आयाम स्थापित किये है। इस दौरान जहां कई नई परियोजनाओं को स्वीकृति मिली है वहीं तमाम पुरानी परियोजनाओं पर भी काम शुरू हुआ है। निर्माण कार्यो की बात करें तो सड़कों के निर्माण के साथ ही पुल को बनाने का काम भी तेज हुआ है। जलालाबाद को भगवान परशुराम की जन्मस्थली के रूप में पर्यटन स्थल घोषित करने के साथ ही विभिन्न सड़कों के

अलग–अलग स्थानों पर खुलने वाले इन बेलनेस सेन्टर पर सीएचओ और कम्युनिटी हेल्थ आफीसर तैनात रहेंगे जो मरीजों का इलाज करेंगे। इससे मेडिकल कालेज और जिला अस्पताल में लगने वाली भीड़ में कमी आयेगी। योगी सरकार के दूसरे कार्यकाल में पुवायॉ से बदायूँ के दातागंज को जोड़ने वाला तिलहर जैतीपुर मार्ग की दशा काफी वर्षो से काफी जर्जर थी। सड़क गढ्ढों में तब्दील हो चुकी थी इस मार्ग पर से पैदल निकलना भी मुश्किल था। क्षेत्र के लोगों की मांग पर लोक निर्माण मंत्री जितिन प्रसाद ने इस सड़क के निर्माण को स्वीकार करते हुए इसे स्वीकृति दिलाई। वित्तमंत्री सुरेश कुमार खन्ना के साथ फरवरी माह में इसका निर्माण कार्य शुरू कराने के लिए भूमि पूजन भी किया गया। 37.

सहजमार्ग जंक्शन का निर्माण

महानगर के अजीजगंज तिराहे पर पीपीपी मॉडल से श्री रामचन्द्र मिशन के संस्थापक महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (बाबू जी) की प्रतिमा की स्थापना के साथ ही 'सहजमार्ग' जक्शन का निर्माण कराया गया है इसका लोकार्पण पिछले दिनों सरकार के वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना की मौजूदगी में मिशन के अध्यक्ष कमलेश डी पटेल ने किया था। इस जंक्शन के निर्माण से अजीजगंज तिराहे का सौन्दर्यीकरण हुआ है।

आरामदेह सफर ई-बसों के साथ

जिले में डगगामार वाहनों के सहारे चल रही है परिवहन व्यवस्था में ई–बसों के संचालन के बाद काफी सुधार हुआ है। राज्य स्मार्ट सिटी में चयनित शाहजहांपुर महानगर में बेहतर परिवहन सुविधा के लिए प्रथम चरण में 15 ई–बसों की सौगात मिली है। यह बसें जनपद के जलालाबाद, पुवायॉ, निगोही, बीसलपुर, शाहाबाद आदि मार्गो पर चल रही है। इनके संचालन से यात्रियों को आरामदेह सफर करने का मौका मिला है।

शहरवासियों को जल्द मिलेगा रोपवे यात्रा का आनंद

शाहजहांपुर महानगरवासियों को जल्द ही रोपवे का सफर करने का मौका मिलने वाला है। यह रोपवे हनुमतधाम से सिटी पार्क कालोनी के पीछे तक बनाया जायेगा। इसके लिए वित्तमंत्री व शहर विधायक सुरेश कुमार खन्ना ने प्रमुख सचिव पर्यटन नितिन गोकरण के साथ स्थलीय निरीक्षण भी किया है। रोपवे के निर्माण के लिए 2 डीपीआर तैयार की गई है शासन से अनुमति मिलने के साथ ही इसका निर्माण कार्य शुरू किया जायेगा। इसके लिए स्थानीय स्तर पर औपचारिकताएं पूर्ण हो चुकी है।

अमर शहीद ठा. रोशन की स्मृति में महाविद्यालय में कक्षाएं आरंभ

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में जनपद के शहीदों के सम्मान के लिए हर संभव प्रयास किये हैं। काकोरी काण्ड के अमर शहीद ठा. रोशन सिंह की जन्मस्थली नवादा दरोवस्त में पूर्व केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री स्वामी चिन्मयानन्द के अथक प्रयासों से ठा. रोशन सिंह संघटक राजकीय महाविद्यालय का निर्माण कराया गया है। जिसमें इसी सत्र से कक्षाएं भी प्रारंभ हो गई है। शहीद रोशन सिंह की स्मृति में स्थापित इस महाविद्यालय में बीए, बीएससी, बीकाम, एमएससी, एमए और एमकाम., की कक्षाएं संचालित की जा रही है। इसके साथ ही नवादा में योगी सरकार ने एक इण्टर कालेज की स्थापना भी की है साथ ही खुदागंज से नवादा तक की सड़क का निर्माण भी कराया गया है।

नए कलेवर में दिखाई देगा हनुमतधाम

प्रदेश के वित्तमंत्री सुरेश कुमार खन्ना के ड्रीम प्रोजेक्ट हनुमतधाम के आस पास विकास के तमाम कार्य कराये गये है। हनुमतधाम में जहां जल्द ही रोपवे की सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी। वहीं एक नए पिकनिक स्पॉट को बनाने का भी प्रस्ताव है। सिटी पार्क के पीछे से जहां रोपवे शुरू होगा वहां पर चिल्ड्रेन पार्क, फूड कोर्ट आदि बनाया जायेगा। नगर निगम ने इसके लिए प्रस्ताव बनाने का काम शुरू कर दिया है।

निर्माण को भी मंजूरी मिली और उन पर काम शुरू हुआ। जनपद में बदहाल बिजली व्यवस्था के सुधार के लिए भी तमाम काम चल रहा है। बिजली चोरी रोकने के लिए 3 लाख 52 हजार घरों में स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने की योजना पर काम चल रहा है। इतना ही नहीं शहर में विकास की तमाम योजनाओं पर काम होता दिखाई दे रहा है। हालांकि विकास के तमाम कार्य अभी पूर्ण नहीं हो पाए है लेकिन माना जा रहा है कि शाहजहांपुर में जिस तेजी से विकास कार्यो को अंजाम दिया जा रहा है आने वाले समय में जनपद एक विकसित शहर के रूप में दिखाई देगा। सड़क परिवहन के साथ–साथ स्वास्थ्य सेवाओं पर भी सरकार ने विशेष ध्यान दिया है पानी के संकट को देखते हुए सरकार ने बेहतर तैयारियां की है। शाहजहांपुर महानगर में अमृत योजना के तहत पार्को का सौन्दर्यीकरण का काम भी कराया गया है। हनुमतधाम से सिटी पार्क कालोनी के पीछे तक बनाये जाने वाले रोपवे का निर्माण भी पाइपलाईन में है। इसके लिए स्थानीय स्तर पर औपचारिकताएं लगभग पूरी हो चुकी है। अजीजगंज से जलालाबाद तक फोरलेन बनाने की मंजूरी मिली है। 28 किलोमीटर से अधिक लम्बे इस मार्ग को चौड़ा करने के लिए 295 करोड़ रूपए खर्च किये जाएंगे। इसके अतिरिक्त बंडा, देवकली नभीची मार्ग, कैन्ट बाईपास मार्ग व मिर्जापुर परौर मार्ग के निर्माण को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। योगी सरकार जनपद में जल संरक्षण को लेकर भी काम कर रही है। अमृत योजना 2 के तहत शाहजहांपुर महानगर में 4 तालाबों को जीर्णोद्धार व सौन्दर्यीकरण कराया जायेगा।

शहर में खन्नौत नदी पर नए पुल के निर्माण का शिलान्यास किया जा चुका है। इसकी लम्बे समय से मांग चल रही थी। स्मार्ट सिटी योजना के तहत शहर की सड़के चौड़ी हुई है। राजकीय इण्टर कालेज से सुभाष चौराहे तक सड़क चौड़ीकरण का काम किया गया। वहीं तिलहर निगोही मार्ग पर स्थित रेलवे क्रासिंग पर ऊपरगामी सेतु के निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई है। जिले में बदहाल बिजली व्यवस्था के सुधार के लिए पुनरोत्थान योजना लागू की गई है। इसके लिए 621 करोड़ रूपए की इस परियोजना से 420 करोड़ रूपए से बिजली नेटवर्क का सुधार कराया जायेगा जबकि 200 करोड़ की लागत से नए बिजली घर बनाये जाएंगे। महानगर में सीवर लाईन बिछाने व पेयजल के लिए लाईन बिछाने का काम तेजी से चल रहा है इतना ही नहीं बड़े शहरों की तर्ज पर शहर में गैस पाइप लाईन भी विकास, साउथ सिटी आदि मोहल्लों में गैस के कनेक्शन भी हो चुके है केवल सप्लाई होना शेष है।

राज्य स्मार्ट सिटी में चयनित शाहजहांपुर महानगर में परिवहन व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए ई–बसों का संचालन किया गया है। यह बसें जलालाबाद, शाहाबाद, पुवायॉ, बीसलपुर आदि मार्गो पर चल रही है इनके चलने से यात्रियों को काफी सुविधा मिली है। जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए भी काम हुआ है। जिला अस्पताल समेत छह स्थानों पर हेल्थ एटीएम लगाए गए हैं जिसमें कोई भी व्यक्ति अपनी निशुल्क जांच करवा सकता है। इसके अतिरिक्त जनपद में 12 अर्बन हेल्थ बेलनेस सेन्टर भी खोले जा रहे हैं। 35 किलोमीटर लम्बे इस मार्ग निर्माण में करीब 13368.41 करोड़ की लागत आयेगी। इस मार्ग के निर्माण हो जाने के बाद 3 जिलों की 4 तहसीलों के करीब 7 लाख से अधिक आबादी को यातायात सुगम होगा। इसके अतिरिक्त लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन में अतिरिक्त निरीक्षण भवन के निर्माण का प्रस्ताव भी भेजा गया है इसमें एक वीवीआईपी व 8 सामान्य सूट बनाने की योजना है। इसके साथ ही मीटिंग हाल का निर्माण भी कराया जायेगा। इसके लिए 2.5 करोड़ रूपए के बजट का प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजा गया है। शहर में पेयजल सुविधा के लिए भी युद्ध स्तर पर काम किया गया है। पानी की सप्लाई के लिए ओवरहेड टेंक बनाने और कनेक्शन देने का काम चल रहा है। बताया जा रहा है कि अगले एक दो माह के भीतर घरों में पानी की सप्लाई शुरू हो जायेगी। इसके लिए पाइपलाईन की टेस्टिंग का कार्य कराया जा रहा है। नगर निगम के जलकर विभाग की ओर से रिपोर्ट मिलने के बाद पानी की सप्लाई को घरों तक पहुंचाने का काम शुरू हो जायेगा। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है योगी सरकार के 6 वर्ष 6 दिन में शाहजहांपुर जनपद को भी अच्छे दिनों का आहट सुनाई देने लगी है महानगर सहित जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में आम नागरिकों की आधारभूत सुविधाओं के लिए काफी कुछ किया गया है और काफी कुछ किया जाना शेष है। योजनाओं को अमलीजामा पहनाना सरकार और अधिकारियों के लिए पहली प्राथमिकता होनी चाहिए, तभी योगी सरकार के अच्छे दिनों का नारा शाहजहांपुर में सार्थक होगा।

शाहजहांपुर शहीद संग्राहलय जहां जीवंत है शहीदों की संघर्ष गाथा

शाहजहांपुर। शहर के जीएफ कालेज के सामने छावनी परिसर में बना शहीद संग्राहलय में अमर शहीदों की यादें और 1857 से लेकर 1947 तक की संघर्षगाथा के साथ–साथ शाहजहांपुर की तमाम धरोहरों को संजोया गया है। संग्राहलय में कदम रखने वाले आजादी के लिए अंग्रेजी हुकूमत से अमर शहीदों के संघर्ष और उनके बलिदानों की गाथा से रूबरू हो सकेंगे। शहीद संग्राहलय में इतिहास का सिलसिले बार वर्णन किया गया है। इसके अलावा काकोरी काण्ड, झांसी की रानी, लाल किले पर स्वतंत्रता का जश्न, ठा0 रोशन सिंह के किताब पढ़ने का दृश्य, काकोरी एक्शन में अदालत का दृश्य आदि प्रस्तुत किया गया है। संग्राहलय एक लाइब्रेरी का निर्माण भी किया गया है। शहीद संग्रीलय ओपन थिएटर का भी निर्माण किया गया है जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम हो सकेंगे। थिएटर में करीब 250 लोगों के बैठने की व्यवस्था के साथ–साथ कलाकारों के लिए ग्रीन रूम भी बनाया गया है। इसके साथ ही सग्राहलय में जिले के उद्योगों, पर्यटन स्थलों व अन्य प्रमुख स्थानों के मॉडल भी रखे गये है जिसमें प्रमुख रूप से ओसीएफ, रामचन्द्र मिशन आश्रम, रिलायंस थर्मल पावर, केआर पेपर मिल व हनुमतधाम शामिल है। शहीद संग्राहलय का उद्घाटन प्रदेश सरकार के वित्तमंत्री सुरेश कुमार खन्ना द्वारा किया जा चुका है लेकिन तमाम झंझटों में चलते यह संग्राहलय अभी आम जनता के लिए खोला नहीं जा सका है। जिससे फिलहाल संग्राहलय जनता के लिए अनुपयोगी ही साबित हो रहा है।

सम्पादकीय

राहुल गांधी अब पूर्व सांसद

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को मानहानि के एक मामले में सूरत की अदालत में दो साल की सजा सुनाई। अदालत के फैसले के साथ ही आखिरकार वही हुआ, जिसकी आशंका कांग्रेस को सता रही थी। इधर मानहानि मामले में सूरत की स्थानीय अदालत ने राहुल गांधी को दो साल कैद की सजा सुनाई, उधर लोकसभा सचिवालय ने उनकी सदस्यता समाप्त कर दी। प्रतिनिधित्व अधिनियम के अनुसार अगर किसी सदस्य को आपराधिक मामले में दो साल या उससे अधिक की सजा सुनाई जाती है, तो उसकी सदस्यता समाप्त की जा सकती है। मगर यह सब जिस तरह आनन–फानन में हुआ, उससे जहां एक ओर सरकार की मंशा पर प्रश्नचिन्ह लग रहे हैं वहीं दूसरी ओर नए सवाल उठने शुरू हो गए हैं। अभी इस बात को लेकर चर्चा चल रही थी कि सूरत की स्थानीय अदालत का फैसला कहां तक उचित है, कि लोकसभा सचिवालय का यह नया फैसला आ गया। हालांकि सूरत की अदालत ने फैसला सुनाने के साथ राहुल गांधी को एक महीने की समय दिया गया है। इस बीच उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाएगा और वे इस फैसले को ऊपरी अदालत में चुनौती दे सकते हैं। मगर लोकसभा सचिवालय ने एक दिन की मोहलत देना भी मुनासिब नहीं समझा। ऐसे में कांग्रेस समेत सभी विपक्षी दलों को सरकार पर नए सिरे से आरोप लगाने का एक और मौका मिल गया है और सभी विपक्षी दल सरकार पर लोकतंत्र की हत्या का आरोप लगा रहे है।

सूरत की अदालत के फैसले से एक बार फिर यह बात रेखांकित हुई है कि सार्वजनिक जीवन में राजनेताओं को अपनी भाषा में संयम रखना ही चाहिए। उत्तर प्रदेश में आजम खां भी इसी तरह अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल करने की वजह से अपनी सदस्यता गंवा चुके हैं। मगर देखना है कि इन फैसलों से राजनेता कितना सबक लेते हैं। राहुल गांधी के मामले में आए फैसले के राजनीतिक और न्यायिक निहितार्थ हो सकते हैं, पर यह सवाल अपनी जगह बना हुआ है कि आखिर राजनेताओं को अपनी व्यक्तिगत राजनीतिक खुन्नस निकालने के लिए अशोभन वक्तव्य देने की छूट क्यों मिलनी चाहिए। राहुल गांधी अकेले ऐसे नेता नहीं हैं, जिन्होंने सार्वजनिक मंच से किसी को निशाना बना कर अपमानजनक वक्तव्य दिया। ऐसे राजनेता हर दल में हैं।

सत्तापक्ष के तमाम नेता भी समय–समय विपक्षी दल के नेताओं पर अशोभनीय टिप्पणी करते रहते हैं उसके कई नेताओं के बयानों को लेकर आपत्ति जताई जाती रही है, अलबत्ता उनके खिलाफ इस तरह किसी ने मानहानि का मामला दर्ज नहीं कराया। दरअसल, राजनीति में यह मान कर चला जाता रहा है कि चुनाव प्रचार के दौरान या रैलियों में सार्वजनिक मंचों से दिए जाने वाले बयानों को गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए।

मगर राहुल गांधी के मामले से अब यह आशंका भी पैदा हो गई है कि कहीं सारे राजनीतिक दल इसे परिपाटी न बना लें। इस तरह उम्मीद की जाती है कि सभी राजनेता इस गंभीरता को समझ सकेंगे कि उन्हें सार्वजनिक मंचों और बयानों के वक्त भाषा की मर्यादा रखनी चाहिए। इसमें बेशक सत्तापक्ष यह कह रहा हो कि राहुल गांधी को सजा अदालत ने सुनाई है और उनकी सदस्यता नियम के मुताबिक समाप्त की गई है, मगर उस पर बदले की भावना से काम करने के आरोप लगने शायद ही बंद हों। क्योंकि सत्तापक्ष के नेता उसी समय से राहुल गांधी की सदस्यता समाप्त करने की मांग कर रहे थे, जब उन्होंने लंदन में भाषण दिया था। इस तरह उनकी सदस्यता जाने से सत्तापक्ष को कितना नफा–नुकसान होगा, यह तो समय बताएगा, मगर राजनीतिक मर्यादा की रेखा तो उसके सामने भी खिंची हुई है।

भ्रष्टाचारः राष्ट्रीय विकास में बाधक

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य, शाहजहांपुर

भ्रष्टाचार अर्थात् नीतिविरुद्ध आचरण। स्वार्थ के तहत अपरिमार्जित वृत्तियों ने समृद्ध सांस्कृतिक सिद्धान्तों को अनदेखा कर दिया है। सम्प्रति यह विडंबना ही है कि 'परद्रव्यं लोश्ठवत्' तथा 'आचारः परमो धर्मः' के आदर्श को संस्थापित करने वाला हमारा देश इस समस्या से आक्रांत है। भ्रष्टाचार न केवल मानव मूल्यों का क्षरण करता है, बल्कि राष्ट्रीय विकास में भी अवरोध डालता है। यूं तो भ्रष्टाचार–क्षेत्र के बहुविध रूप हैं किंतु वर्तमान में इसे आर्थिक जगत से अधिक जोड़कर देखा जा रहा है।

यहां विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस समस्या के मूल में निर्धनता नहीं अपितु भौतिकता की अधिकाधिक लालसा है। लोलुपता के वशीभूत हो इससे वैयक्तिक छवि को ही नुकसान नहीं पहुंचता अपितु सामाजिक/राष्ट्रीय छवि भी दुष्प्रभावित होती है। इतना ही नहीं, मानवीय रूख भी प्रश्नांकित हो जाता है। यह व्यक्ति के नैतिक पक्ष पर प्रहार के साथ ही राष्ट्र कल्याण की दिशा को बाधित करता है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध दंडात्मक व्यवस्था भी कदाचित् पूर्णरूपेण सुपरिणाम देने में अक्षम ही दिखाई दे रही है। राष्ट्रव्यापी इस समस्या की गम्भीरता प्रबुद्ध जनों के मध्य चर्चा में केन्द्रित है। अतः समाज–देश हित में भ्रष्टाचार के नियंत्रण के उपायों पर विचार करने व पहल करने की सामयिक आवश्यकता है। अस्तु, विषम स्थितियों में भी वैश्विक स्तर पर वरणीय सनातन संस्कृति ने सदा कर्तव्यपथ आलोकित किया है। वस्तुतः सांस्कृतिक तत्वों में वैदिक शिक्षाओं में सार्वजनिक जीवन को साफ सुथरा बनाने का अपूर्व सामर्थ्य निहित है। इस दिशा में भी सांस्कृतिक आदर्श–सिद्धान्त जनजीवन में आशान्वित करते हुए दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में वैदिक मंत्रभाग है।

वैदिक संस्कृति सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय सदाचरण का सुपथ प्रशस्त करती है। इसमें कोई संशय नहीं कि सदाचार का पथ ही भ्रष्टाचार से विमुखता में सहायक बन सकता है। जीवन प्रणाली में इसकी प्राथमिकता द्वारा सदाचरण की ओर प्रवृत्ति और भ्रष्टाचरण से निवृत्ति संभव है। सदाचरण ही मानवता का आधार तत्व है। लोकमांगल्य का प्रतिपादक है। नैतिकता का परिचायक है। लोभादि वृत्तियों का नियामक है। मानसिक स्वस्थता का अवबोधक है। समाज की सुव्यवस्था में सहायक है। राष्ट्रीय चरित्र का आधार है। इसकी महत्ता को अंगीकार कर भ्रष्टाचार को पस्त किया जाना संभव है। निस्सन्देह, उदात्त आचरण के सुप्रभाव में अनुकूल परिवेश विनिर्मित करने की संभावनाएं दिखाई देती हैं।

भ्रष्टाचार जनहित को बाधित करता है। राष्ट्र– व्यवस्था को चिह्नित करता है। 'भ्रष्टाचार राष्ट्रविकास में अवरोधक तत्व है' यह उच्च भाव व्यक्ति को सदाचरण की ओर प्रवृत्त कर सकता है, भ्रष्टाचार को निर्मूल कर सकता है, वैचारिक उदारता को जगा सकता है। प्रखर राष्ट्रवादी प्रेम इसके उन्मूलन की क्षमता रखता है।

स्वस्थ तथा सकारात्मक विचारों में भ्रष्टाचार मुक्त समाज की संकल्पना को आकार देने का प्रबल सामर्थ्य है। अथर्ववेद में जीवन की उत्कृष्टता हेतु संदेश दिया है कि हे मानव! तुझे उत्थान हेतु गतिशील होना है तथा पतन से सचेत। जनसामान्य द्वारा कर्तव्य अवबोध से संयुक्तता और सक्रिय सहभागिता हो, तो कदाचित् कोई भी समस्या असमाधेय नहीं। नीतिकारों ने भ्रष्ट–आचरण के विरूद्ध सावधान भी किया कि आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः।

भ्रष्टाचार के निस्तारण के लिए मन को संयमित करना सन्मार्ग पर संचालित करना अपरिहार्य है। सद्भावों से सत्कर्मों से संयुक्तता में प्रभावी परिणाम देखे जा सकते हैं। अतएव मन को पापकर्मों से विरत रखने का प्रयास किया गया।

वैदिक संहिता, निशि) कृत्यों से बचने, और उदात्त आचरण को अपनाने अर्थात् चरित्र का निर्माण करने पर बल देती हैं। यजुर्वेद में चारित्रिक अवनयन से बचाने, अनुचित आचरण से सर्वथा दूर करने और सदाचार में स्थिर करने हेतु स्तवन किया गया। अर्थात् हे ज्ञानस्वरूप प्रभु! दुष्चरित्र से मुझे बचाएं। मैं सच्चरित्र बनूं। अनुचित में प्रवृत्ति न हो। अच्छे कार्यों में अनुरक्ति हो। ऐसे कर्मों में संलिप्तता हो जिनसे समाज/राष्ट्र में अच्छाई विस्तारित हो।

यह निर्विवाद तथ्य है कि अज्ञान– मार्ग पर संचरण अभ्युदयकारी नहीं। अतएव संकीर्णता–स्वार्थपरता से ऊपर उठकर जनहितार्थ न्यायोचित आचरण एवं व्यवहार को प्रमुखता देना उपयुक्त है।

इस हेतु आवश्यकता है– शिव संकल्पों की, सुदृढ़ विचारों की। यही जीने का तरीका वैयक्तिक–सामाजिक –राष्ट्रीय कल्याण का मार्ग दिखा सकता है। निश्चित ही, नीतिसम्मत मार्ग पर चलना–बढ़ना प्रशस्त्य है। अस्तु, इस समस्या के समाधानार्थ आगामी पीढ़ी में भ्रष्टाचार के विरुद्ध भावात्मक श्रेष्ठता को संजोना प्रभावी कदम होगा। इस ओर बढ़ने के लिए नैतिक स्तर पर जागरूकता जरूरी है। अंततः शासनिक प्रयासों के साथ ही वैयक्तिक स्तर पर भ्रष्टाचार को दूर करने के प्रयासों की प्रबल अपेक्षा है।

खाद्यान्न आपूर्ति पर मंडराता संकट

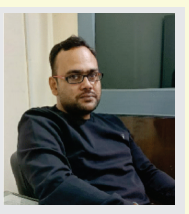

शिशिर शुक्ला
शाहजहांपुर

हाल ही में ग्लोबल कमीशन ऑन द इकोनॉमिक्स ऑफ वाटर के द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार, जल की कमी एवं बढ़ते तापमान के कारण आने वाले दो दशकों में खाद्य उत्पादन में कमी आ जाएगी। जीसीईडब्ल्यू की इस रिपोर्ट के अनुसार खाद्य आपूर्ति के मामले में भारत को वर्ष 2050 तक 16 प्रतिशत से अधिक की कमी का सामना करना पड़ेगा। परिणामतः खाद्य असुरक्षित आबादी में 50 प्रतिशत से भी अधिक की वृद्धि होने का अनुमान लगाया जा रहा है। साथ ही साथ रिपोर्ट यह भी कहती है कि वर्तमान दशक के अंत तक संपूर्ण विश्व में ताजे पानी की आपूर्ति की मांग 40 प्रतिशत तक बढ़ जाएगी। निस्संदेह इस रिपोर्ट के आंकड़े चौंकाने वाले हैं किंतु खाद्यान्न आपूर्ति से संबंधित इस नवीन समस्या की संभाव्यता पूरी तरह से पहले से ही विद्यमान ज्वलंत समस्याओं की नींव पर आधारित है। जीसीईडब्ल्यू की रिपोर्ट में खाद्यान्न पर मंडराने वाले संकट के बादलों की उत्पत्ति का कारण भी स्पष्ट रूप से बताया गया है। जल संकट एवं बढ़ता तापमान आज वैश्विक समस्या के रूप में हम सबके समक्ष उपस्थित हैं।

भारत के संदर्भ में यदि बात की जाए तो उपलब्ध आंकड़े यह बताते हैं कि वर्ष 2023 में ही भारत के द्वारा आबादी के मामले में चीन को पछाड़कर प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया जाएगा। यह सर्वविदित है कि पृथ्वी पर कुल जल उपलब्धता का एक अल्पांश ही स्वच्छ व पेयजल के रूप में उपलब्ध है। औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की बढ़ती रफ्तार ने जहां एक ओर भूजल जैसे अमूल्य संसाधन का अनियंत्रित दोहन किया है वहीं दूसरी ओर प्रकृति द्वारा भूजल स्तर के स्वतः पुनर्वयवस्थीकरण के रास्ते को भी बंद करने का काम किया है। जल जैसा अमूल्य संसाधन जोकि जीवन हेतु एक अनिवार्य शर्त है, विवेकी मानव के स्वार्थजनित अविवेक के कारण आज अनुपलब्धता की स्थिति में आने जा रहा है। आठ बिलियन के आंकड़े को पार कर चुकी वैश्विक आबादी तीन दशकों के बाद दस बिलियन तक पहुंच जाएगी, ऐसा संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है। प्रश्न यह उठता है कि जब जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होगी एवं इसके विपरीत संसाधनों के अविवेकपूर्ण उपयोग के कारण उनकी उपलब्धता में द्रुतगति से ह्रास होगा, तब ऐसी स्थिति में आबादी एवं संसाधनों की मात्रा के मध्य संतुलन कैसे कायम रह पाएगा। अंधाधुंध वृक्षों की कटाई, कृषि योग्य भूमि पर धनलोलुपतावश आवासों का निर्माण एवं शहरीकरण व औद्योगीकरण के नाम पर निरंतर प्रकृति के साथ हो रही अमानवीयता ने ही वैश्विक तापन जैसी ज्वलंत समस्या को जन्म दिया है। जल की कमी एवं जलवायु परिवर्तन अन्न उत्पादन हेतु अनिवार्य दशाओं पर प्रहार करके निस्संदेह खाद्य संकट जैसी समस्या को जन्म देंगे। ग्लोबल नेटवर्क अगेंस्ट फूड क्राइसिस के द्वारा जारी खाद्य संकट पर वैश्विक रिपोर्ट 2022 के अनुसार वर्ष 2021 में 40 मिलियन से अधिक लोगों ने तीव्र खाद्य असुरक्षा का अनुभव किया। यद्यपि खाद्य असुरक्षा के पीछे अनेक कारक उत्तरदायी हैं किंतु चिंताजनक बात यह है कि जल संकट एवं ग्लोबल वार्मिंग भी खाद्यान्न संकट के सक्रिय कारकों के रूप में उभर रहे हैं। भारतवर्ष के लिए यह स्थिति अपेक्षाकृत अधिक गंभीर इसलिए है क्योंकि हम शनैरू शनैरू जनसंख्या के मामले में तो अग्रणी होने की ओर अग्रसर हैं किंतु इस आबादी के लिए संसाधनों के बंदोबस्त की कोई ठोस योजना अभी तैयार नहीं है। खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार भारत चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा खाद्य उत्पादक देश है। आजादी के बाद जहां भारत की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई है, वहीं खाद्यान्न उत्पादन में भी तीव्र बढ़ोत्तरी हुई है। किंतु बढ़ते तापमान की वजह से जलवायु की प्रतिकूलता एवं जल जैसे अनिवार्य संसाधन की विलुप्तता खाद्यान्न उत्पादन हेतु प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न करेगी।

निश्चित ही इस समस्या को एक दूरदर्शितापूर्ण दृष्टिकोण से देखते हुए इसके निवारण हेतु सक्रिय कदम उठाये जाने की महती आवश्यकता है। हमें यह कदापि विस्मृत नहीं करना चाहिए कि जल जीवन का सीधा पर्याय है, हर हालत में इसे संरक्षित किया ही जाना चाहिए। भूजल के सीमित व नियंत्रित दोहन एवं वर्षाजल के संचयन के द्वारा जल जैसे अमूल्य संसाधन को संरक्षित करने का प्रयास किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मानव को प्रकृति के साथ दखल के अतिरेक को पूर्णतया त्याग देना चाहिए। प्रकृति को अपना पोषक मानकर उसके संवर्धन एवं संरक्षण हेतु प्रत्येक स्तर पर तत्परता दिखाई जानी चाहिए। हमें खाद्य आपूर्ति को खतरे के घेरे से बाहर निकालने की युक्ति आज ही सोचनी व समझनी होगी अन्यथा भविष्य में यह भी एक वैश्विक संकट के रूप में उभरकर हमारे लिए परेशानी का कारण बन जाएगा।

नीना सिन्हा, पटना

पासा पलट

जयमाल के वक्त दूल्हे की बहन को अचानक प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। बारात गाँव आई हुई थी, जमावड़े में एक भी डॉक्टर उपलब्ध न था, ओऽहहह! अफरा तफरी मची, निकटतम शहरी अस्पताल में स्त्री रोग विशेषज्ञ और एम्बुलेंस के लिए फोन किया गया। फैसला मुश्किल था कि एंबुलेंस का इंतजार करें या दर्द से बेचौन बेटी को लेकर शहर भागा जाए? एंबुलेंस को पहुँचने में आधा–पौना घंटा लग सकता था। दूल्हे के पिता बेटी को विपरीत परिस्थितियों में देख भड़के हुए थे, "इसीलिये मुझे प्रेम विवाह पसंद नहीं। कहाँ आकर फँस गए हम!" "चुप करो जी! बहू गुड़िया सी है। उसी कंपनी में अच्छे पद पर कार्यरत लड़की है। और क्या चाहिए?" दूल्हे की माताजी बोलीं। "बदहाल इंतजाम देखो इनका। रोशनी उठाये औरतें! हुँऽह! जाने किस युग में जी रहे हैं? बेटी को यहाँ लेकर आना निहायती बेवकूफी है हमारी। हे ईश्वर! आप ही का आसरा है।"

"डॉक्टर की दी गई तारीख में पंद्रह दिन शेष थे। इकलौते भाई की शादी देखने का लोभ संवरण नहीं कर पाई, सासु माँ से अनुमति लेकर चली आई। अच्छी भली थी, पर शायद सफर की थकान से। तभी दुल्हन की माँ वहाँ आईं। समधनों में मशवरा हुआ तथा गाँव की प्रशिक्षित प्रसाविका, जो रोशनी उठाने वालों में से ही एक थी, कमरे में समा गयी। चिंतित पिता एंबुलेंस की स्थिति जानने के लिए फोन करते रहे। अनुभवी प्रसाविका ने अल्प समय में प्रसव करवा लिया। कहा, "बच्चा–जच्चा दोनों स्वस्थ हैं। डॉक्टरनी से जाँच करवा लीजिएगा..।" तत्पश्चात दुल्हन के पिता से कहा, "शादी करवाकर यथाशीघ्र जाने की अनुमति दें। बिटिया और नवजात नवासे को आराम चाहिए होगा।" "जी अवश्य! गाँव देहात भी इन दिनों आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हैं, समधी जी! तभी मेरी बिटिया आपकी बहू बनने योग्य बन सकी। मानते हैं कि नहीं?" "जी!", दुल्हे के पिता की करबद्ध स्वीकृति थी।

भगत सिंह के विचारों को आत्मसात भी करें

राजेन्द्र वर्मा, लखनऊ

भगत सिंह का बलिदान दिवस है। जरूरत है कि हम उनकी यशोगाथा के गान से ही न संतुष्ट होकर चुप बैठ जाएँ, बल्कि उनके आजादी, धर्म, शोषण आदि के विचारों को आत्मसात भी करें। उनकी नजर में आजादी का अर्थ क्या है? उनका कहना था, "हमारी आजादी का अर्थ केवल अंग्रेजों के चंगुल से छुटकारा पाने का नाम नहीं, वह पूर्ण स्वतंत्रता का नाम है। जब लोग परस्पर घुल–मिल कर रहेंगे और दिमागी गुलामी से भी आजाद हो जाएँगे।"

आजादी का एक अर्थ विचारों की आजादी भी होता है, लेकिन आज हममें से कितने वैचारिक रूप से आजाद हैं। पूँजी ने हमेशा ही धर्म की सत्ता और दैवी शक्तियों द्वारा गरीबों का शोषण किया है। धर्म कैसे शोषण का साधन बनता है, इसको लेकर उन्होंने आँख खोलनेवाली बात की, लेकिन उसका कुछ भी असर आज देखने को नहीं मिलता। वे स्पष्ट कहते थे, "मनुष्य को दैवी शक्तियों में विश्वास करने वाला बना दो और उसके पास धन–सम्पति आदि जो कुछ भी हो, सब लूट लो। वह उफ न करेगा, यहाँ तक कि अपने आप के लुटने में खुद आपकी मदद करेगा। धार्मिक उपदेशों और सत्ताधारियों की मिली–भगत से ही जेलों, फासियों, कोड़ों तथा शोषणकारी सिद्धांतों का निर्माण हुआ है। आज धार्मिक अंधविश्वास और कट्टरपंथ हमारी प्रगति में बड़े बाधक हैं। वे हमारे रास्ते के रोड़े साबित हुए हैं। हमें उनसे हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहिए... जो चीज आजाद विचारों को बर्दाश्त नहीं कर सकती, उसे समाप्त कर देना चाहिए।

वे नास्तिक थे और कहते थे, "मैं नास्तिक इसलिए नहीं हूँ कि मुझे धर्म से नफरत है, बल्कि इसलिए हूँ कि धर्म को इनसानियत से नफरत है।" ईश्वर के अस्तित्व अथवा उसकी कार्य–विधि को लेकर वे सवाल उठाते हैं, "तुम्हारा सर्वशक्तिमान ईश्वर, इनसान को उस वक्त क्यों नहीं रोकता, जब वह पाप कर रहा होता है?" आइए, उनकी वैचारिकी को अपनाकर उनके सपने को साकार करें।

बात कहाँ पर बिगड़ी

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

साथ–साथ चलते–चलते वो,
चोट दे गए तगड़ी।
पूछ रहे हैं फिर भी मुझसे,
बात कहाँ पर बिगड़ी।
सीधे–सादे लोगों की तो
तकलीफों में कटती।
जोड़–तोड़ करने वालों में
खीर–पुड़ी है बँटती।
लूट रहे हैं खूब बधाई,
मुझे मारकर टँगड़ी।
सच्चाई चुपचाप खड़ी है
सबने मिल लूटा।
न्याय खरीदा अपराधी ने
बाइज्जत है छूटा।
अंधी बहरी न्याय व्यवस्था,
टाँगों से भी लँगड़ी।
जिसकी पीड़ा वो निपटे
हम देख मौन रह जाते।
इस कारण ही एक एक कर
कष्ट सभी हैं पाते।
बीच राह है गई उछाली,
सदाचार की पगड़ी।

कविता दिवस पर विशेष

एक कविता है जो नहीं मरेगी

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

जब क्षमा, दया, करुणा, उदारता,
न्याय, अहिंसा नैतिकता, उदारता, अस्तेय
शोध का विषय भर हो चुके होंगे
और सदियों से रक्षित महापुरुषों के सपने
आत्महत्या कर चुके होंगे
तब भी एक कविता है जो नहीं मरेगी
क्योंकि यह कविता विलासी रहनुमाओं की
प्रशाति वाचक कविता नहीं होगी
दरअसल यह कविता
जीने की उद्दाम लालसा होगी
जिजीविषा की पराकाष्ठा होगी
अंधे की लाठी होगी
गूंगे की आवाज होगी
और कटे पंख वाले हर निरीह पक्षी की
गगनचुम्बी परवाज होगी
असल में यह एक कविता है जो
आक्सीजन के बिना भी जी लेती है
क्यूंकि यह कविता भविष्य के आगे की
कविता है जो कि हर हाल में जिन्दा बच
जायेगी और जिंदगी जहां कहीं भी
होगी यह उसे टेर लाएगी

शहीद दिवस पर विशेष

उन दीवानों की याद आती है

उन वितानों की याद आती है ।
आसमानों की याद आती है ।
सूलियों पर चढ़े जो गाते हुए
उन दीवानों की याद आती है।
हवाएं थम गईं तूफान लाये।
व्यथामय देश था वरदान लाये।
हथेली पर रखी जां को जलाकर,
उजाले में जो हिंदुस्तान लाये।
कथा तप त्याग की है याद रखना।
दिलों में याद को आबाद रखना।
नमन बलिदान को उनके हजारों,
वतन यह आग जिंदाबाद रखना।

कमल 'मानव'
शाहजहांपुर

आओ देखें

आओ देखें आस पड़ोस में
खेतों में जिंदगी सींचते किसानों को,
देखें रेलवे लाइन किनारे
वेतरतीव झुग्गियों को,
उन बच्चों को देखें,
आधा दिन बीत जाने पर भी
तलाश रही हैं जिनकी आंखें
सूखी रोटी के चंद टुकड़े,
देखें जहां अभी भी
संघर्षरत हैं महिलाएं
अस्तित्व के लिए,
देखें घूरती आंखों को
और देखें उन आंखों में
तैरते खारीपन को,
देखें उस ओर भी जिधर नहीं
देखता है कोई भी, या फिर
कर देता है अनदेखा
देख कर भी,
आओ देखें
जहां जमी है जिंदगी पर
अभी भी वर्फ
और तुली हैं तमाम नजरें
करने को बलात्कार,
नहीं है ठीक कहना कुछ भी
क्योंकि एक जमात नामर्दों की
कर रही है जुगाली शब्दों की,
और हो रहीं हैं शिकार
बारी–बारी सभी बस्तियां,
शायद यही ठीक समय होगा
जबकि आने वाली है शाम,
शायद यही ठीक
समय होगा लड़ने का अंधेरे के खिलाफ,
यही है ठीक समय विवश करने का
हर घूरती नजर को,
परन्तु इस सबके लिए देखना होगा
हर उस ओर जिधर
टांक दी गईं हैं ढेरों आंखें
सिल दी गईं हैं जुवानें और घोल दिया है
शीशा कानों में, मगर
प्रतीक्षारत हैं चेहरे, क्योंकि
नहीं देखा है किसी ने उस ओर
या फिर नहीं जुटा सका है कोई हिम्मत,
आओ देखें बटोरें दृष्टियों को,
भरें शब्दों को मुंह में, और
चल दें इसी समय
सुबह के जन्म लेने से पहले ही,
तय करनी होगी यात्रा,
देखना होगा भीड़ का रुख और
भांपना होगा अंधेरे की साजिशें
देखना होगा हर उस ओर
जिधर नहीं देखा है किसी ने
न ही चाहता है देखना,
देखें हर आंख में झांककर,
हर चेहरे के पीछे के चेहरे को,
चीखों में बदलते शब्दों में
बेहतर यही होगा
कि देखें आस– पास में,
बरना मर जाएंगे सारे शब्द
देखें आस पड़ोस में
क्योंकि नहीं है कोई विकल्प
सिवाय देखने के,
आओ, तय करना होगा कुछ न कुछ
इसलिए आओ देखें,
आस–पास एक नई तैयारी के लिए
रात को आत्महत्या करते हुए, और
जन्म लेते जिदंगी की इबारत को,
आओ देखें,
क्योंकि देखना लाजिमी है,
बेहतर सुबह के लिए तो देखना ही
होगा, आओ देखें।

पंकज मिश्रा 'अटल'
शाहजहांपुर

'लोगतंत्र' के चूल्हे पर अड़ाई दाने की खिचड़ी

रेखा शाह आरबी
बलिया यूपी

हास्य व्यंग

लोकतंत्र भी क्या अजीब चीज है सबके लिए एक ही बना है लेकिन सबको दिखता अलग–अलग एंगल से है सब की दुनिया में सबका अपना–अपना अलग–अलग लोकतंत्र है और अलग–अलग प्रकार से परिभाषित होने की कला सिर्फ लोकतंत्र में ही है। जिनको लगता है कि लोकतंत्र खतरे में है उसमें लोग बाग कम है और राजनीतिक गलियारों के तंत्र मंत्र करने वाले भक्त और भगवान ज्यादा है। तो लोकतंत्र लोगतंत्र बनने की राह पर अग्रसर है।

हमारे देश में लोकतंत्र ही एक ऐसी चीज है जिसकी इज्जत दूसरे तीसरे दिन खतरे में आ जाती है, सब अपने–अपने चश्मे से देखते हैं किसी को फलती फूलती आकाश छूती नजर आती है और किसी को रसातल में जाती हुई नजर आती है। दरअसल लोकतंत्र को तो कथित रूप से बचाने वाले बहुत हैं पर कोई बचाना ही नहीं चाहता... हां बचाने की कथित कवायद तब की जाती है जब जब अपनी लुटिया डूबती हुई नजर आती है और खाट खड़ी हुई नजर आती है। बाकी समय तो लोकतंत्र को जबरदस्ती नदी नाले में डूबाया जाने लगता है। ताकि हाय तोबा मचाया जा सके, छाती पीटने लगते हैं काल्पनिक रूप से ..ताकि उसको निकालने की कवायद करते करते खुद यह राजनीति में कुर्सी की बैतरणी पार कर जाएं।

ऐसा लगता है लोकतंत्र.. लोकतंत्र ना होकर गब्बर के चंगुल में फंसी हुई बसंती है जिसकी इज्जत और मान मर्यादा बस जाने ही वाली है और उसका इज्जत मान सम्मान बचाना अति आवश्यक है लेकिन उसको बचाने की गुहार खुद स्वीकार करने के बजाए लोग सांभा कालिया की शरण में जाते हैं .. चलो सांभा और कालिया से मदद मांग कर उसे बचा लिया जाए छुड़ा लिया जाए। लेकिन सोचने की बात है ..सांबा और कालिया कौन से दूध के धुले हुए हैं ! इसी सांबा और कालिया ने भले ही आज लोकतंत्र का चोला पहन लिया हो लेकिन याद रखना चाहिए कि बसंती को बरसों बरस गुलाम बनाकर अपने इशारों पर नचाया था और उसका हर प्रकार से शोषण किया था मतलब कालिख से कालिख धोने कि इसे कोशिश कहा जा सकता हैं । और ऐसा सिर्फ

राजनीति में ही संभव है असंभव को संभव बनाने की कला का का नाम ही राजनीति है। अरे जब काल्पनिक रूप से पुल बन सकते हैं काल्पनिक रूप से सड़के बन जाती हैं तो काल्पनिक रूप से लोकतंत्र को खतरे में डालना कौन सी बड़ी बात है।

यदि सच में किसी को बसंती की चिंता है और बसंती खतरे में दिख रही है तो उसे कल्लू सांभा कालिया जैसों के बजाय जय और वीरू बनना चाहिए जो थोड़ी बहुत मस्ती तो करते हैं पर दिल के साफ है और बसंती की इज्जत करते हैं सांभा और कालिया तो फिर से बसंती को गब्बर के पास ले जाकर नचायेंगे ही और फिर से वीरू को कहना पड़ेगा। बसंती इन कुत्तों के सामने मत नाचना। लेकिन मुसीबत तो यही होगी कि एक बार मजबूरी और लाचारी में फस जाने पर नाचने के सिवाय क्या उपाय बनता हैअंतः बसंती को नाचना ही पड़ेगा और जिनको बसंती की इतनी ही परवाह है तो खुद मैदान में उतरे और चुन–चुन कर बसंती की समस्याएं दूर कीजिए गैरों से क्या मदद मांगना लेकिन यहां पर हर कोई अपनी अड़ाई दाने की खिचड़ी अलग पकाने में लगा हुआ है। और जब यह खिचड़ी नहीं पक पाती है तो तुरंत तुरंत सर्वप्रथम लोकतंत्र ही खतरे में आता है.. मजे की बात है कि जनता जनार्दन को तनिक पता भी नहीं चलता आभास भी नहीं होता... और लोकतंत्र खतरे में आ जाता है.. जनता को पता भी लोकतंत्र के पहरद्वारो के द्वारा ही पता चलता है। जय हो लोकतंत्र में लोगतंत्र की।

पढाई के साथ सिलाई सीखकर अपनी आमदनी बढ़ाएं: रन्जीव बंसल

विनोबा सेवा आश्रम ई-सिलाई परीक्षण केन्द्र का शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। आज पढाई के साथ साथ व्यवसाय की ओर बढ़ना बहुत ही पुनीत कार्य है। इससे हम पढाई का खर्च भी निकाल सकते हैं। समाज में और लोगों को रोजगार भी मुहैया करा सकते है। उक्त विचार माननीय राज्यपाल द्वारा लोकार्पित स्वाबलम्बन भवन में ई सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ करते हुए बैंक आफ बडौदा के क्षेत्रीय प्रबंधक रन्जीब बंसल ने शिलापट का अनावरण करते हुए व्यक्त करते हुए कहा कि विनोबा सेवा आश्रम जिस मनोयोग से गांव के लोगों की सेवा कर रहा है। वह बहुत ही बधाई की पात्र है। बैंक भी उनके पुनीत कामों में कुछ भागीदारी करके पुण्य का भागीदार बनता आ रहा है।

विनोबा सेवा आश्रम के सचिव मोहित कुमार ने कहा कि बैंक आफ बडौदा ने आज आश्रम को जो महिलाओं की ट्रेनिंग और कार्य देने की जिम्मेदारी सौंपी है। उसे हमारी टीम अच्छे ढंग से पूर्ण करेगा। बैंक आफ बडौदा बनतारा के प्रबंधक मनोज कुनार ने कहा कि प्रशिक्षण के बाद अगर ऋण की आवश्यक्ता होगी तो हमारी बैंक शाखा प्रदान करेगी। विनोबा सेवा आश्रम के संस्थापक रमेश भैया ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि बाबा विनोबा का सपना था कि आधी कमाई आधी पढाई होनी चाहिए। इस अवसर पर प्रभारी दिव्या बहन, समन्वयक अखलाक खान, टीम लीडर मृदुला बहन, अजय पाल, के पी सिंह, प्रिया सिंह, प्राचार्य डा ओ पी सिंह ने भी विचार व्यक्त किये। सभी का स्वागत खादी प्रभारी अखिलेश उपाध्याय ने सूत माला और अंग वस्त्रं से किया । प्रशिक्षक रईस अहमद और मनोज कुमार को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित भी किया गया। संचालन निदेशक बिशशन कुमार ने किया। सभी का आभार मुदित कुमार ने किया।

21 अप्रैल को शाहजहांपुर पहुंचेगी व्यापारी स्वाभिमान यात्रा

उद्योग व्यापार मण्डल ने बैठक की बनाई स्वागत की रणनीति

लोक पहल

शाहजहांपुर। उद्योग व्यापार मण्डल मिश्रा गुट की कोर कमेटी की एक बैठक नीरज गुप्ता के प्रतिष्ठान पर हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला अध्यक्ष कुलदीप सिंह दुआ ने कहा कि प्रांतीय अध्यक्ष मुकुंद मिश्रा के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर एक 'व्यापारी स्वाभिमान यात्रा' 13 मार्च से सहारनपुर से शुरू हुई है और जो 7500 किलोमीटर चलकर 300 जिलो एवं कस्बों में होते हुए 8 मई को लखनऊ में समाप्त होगी। यह यात्रा 21 अप्रैल शुक्रवार को सुबह 11 बजे शाहजहांपुर में मोहम्मदी रोड से प्रवेश करेगी। इस यात्रा का हथौड़ा चौराहा पर स्वागत कर उसे सभी पदाधिकारियों के साथ लोदीपुर, खिरनी बाग, सदर थाना सदर बाजार, बहादुरगंज, मशीनरी मार्केट, घंटाघर से तारीन टिकली व लाल इमली चौराहा होते हुए बाबा विश्वनाथ मंदिर में लाया जाएगा। जहां रात्रि विश्राम कर यात्रा सुबह 9 बजे पीलीभीत के लिए रवाना होगी। यात्रा में एक शिकायत बक्सा रखा जाएगा जिसमें व्यापारी अपनी समस्याओं से संबंधित पत्र डाल सकेंगे एवं 8 मई को यात्रा समापन के बाद उनके पत्रों पर लिखी समस्याओं का प्रदेश सरकार से व केंद्र सरकार से समाधान कराया जाएगा।

बैठक में नगर अध्यक्ष संजीव राठौर, जिला महामंत्री नाजिम खा, अतुल गुप्ता, नीरज गुप्ता, रोहित अग्रवाल, कमाल फहीम, गौरव गुप्ता, शकील अहमद आदि पदाधिकारी शामिल हुए।

जिंदाबाद जवानी लिख दी, जिंदा हिंदुस्तान लिखा

उत्तर प्रदेश साहित्य सभा ने किया काव्य समागम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश साहित्य सभा की शाहजहाँपुर इकाई द्वारा प्रथम काव्य समागम का आयोजन कटिया टोला स्थित महेश गुप्ता के आवास पर सम्पन्न हुआ। काव्य समागम का आरम्भ कवयित्री सरिता वाजपेयी ने मां शारदे की वंदना से किया जिसके बाद उपस्थित कवियों ने अपनी–अपनी रचनाएं इस प्रकार सुनाईं।

कवि सुशील दीक्षित 'विचित्र' ने कहा–देश नहीं चलता है जलते प्रश्नों को ढोने से। देश नहीं चलता है मखमल के गद्दे पर सोने से।।

कवयित्री सरिता बाजपेयी ने सुनाया– यूँ सफर में बसर करने वाले। सदा आंखों ने देखे उजाले। राह की ठोकरें हम से बोलीं, हुई मंजिल ये तेरे हवाले।।

कवि डॉ इन्दु अजनबी ने सुनाया–जिससे मन प्राण हुए दोनों सुवासित मेरे, तेरा छूना किसी चन्दन की छुअन जैसा था ।।

कवि प्रदीप वैरागी ने कहा – कोई लौटा दे वह बचपन उछलना चाहता हूँ। पकड़ पापा की उंगली फिर से चलना चाहता हूँ।।

उर्मिलेश सौमित्र ने सुनाया–जब लिखने की बारी आई तो पहले बलिदान लिखा। जिंदाबाद जवानी लिख दी जिंदा हिंदुस्तान लिखा।।

राशिद हुसैन राही जुगनू ने सुनाया– आज इक खत मिला ऐसा के लिखा है जिसमें। जब तलक सांस रही आपका रस्ता देखा।। जिसके साये में ठहर जाते थे दौराने सफर। अब के तो राह का वह पेड़ भी सूखा देखा।।

रामबाबू शुक्ला ने सुनाया–देख अन्याय चुप रहना मेरी आदत नहीं है। मौत के भय से घबराना मेरी आदत नहीं है। लेखनी झुक नहीं सकती भले ही हाथ कट जाएँ, झूठ को सत्य लिख पाना मेरी आदत नहीं है ।।

अरविंद पंडित ने सुनाया–तुम सबल पुरुषार्थ का प्रमाण दीजिए। फिर से नया भगीरथ निर्माण कीजिए।।

सुदीप शुक्ला ने कहा– न दायां हाथ भी बाएं पे विश्वास करता है। गरीबों की व्यथा छोड़ो मिडिल भी रोज मरता है।।

पीयूष शर्मा ने कहा – प्यार की राजधानी मुकम्मल हुई। एक तस्वीर यानी मुकम्मल हुई। तुम मिले तो सदा धड़कनों से उठी, लो हमारी कहानी मुकम्मल हुई। इसके अतिरिक्त विवेक शर्मा, रमनीश प्रसाद कश्यप, मनोज शर्मा गोपाल आदि ने भी काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्था संरक्षक डॉ. रवि मोहन ने माँ शारदे के चित्र पर माल्यार्पण व समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। संस्था के सचिव युवा गीतकार पीयूष शर्मा ने अतिथियों का बैज लगाकर स्वागत किया। अन्त में आभार महेश गुप्ता द्वारा व्यक्त किया गया।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया हिन्दू नववर्ष

शंखनाद प्रतियोगिता व भजन संध्या का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। हिन्दी नववर्ष के अवसर पर वीआईपी ग्रुप विद हैल्पिंग हैंड्स के सदस्यों ने हनुमतधाम पर गणेश वंदना के साथ शंखनाद करते हुए भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित करते हुए हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस दौरान जमकर आतिशबाजी,पैराशूट कैंडिल,रंग बिरंगी फुलझड़ी आदि का लोगों ने जमकर लुफ्त उठाया। वैशाली म्यूजिकल ग्रुप के सदस्यों ने देर रात्रि तक भक्ति गीतों से कार्यक्रम में शमा बांध दिया। कार्यक्रम में देर तक शंखनाद करने वाले मीनाक्षी अग्निवेश, रिद्धि बहल, एस. के. पाठक, हर्षवर्धन अगिनहोत्री, अमन पाण्डेय पुनीत मिश्रा को ग्रुप के सदस्य चन्द्रशेखर खन्ना धीरू ने सम्मानित किया। इस अवसर पर चन्द्रशेखर खन्ना उर्फ धीरू खन्ना ने कहा कि शंख की आवाज से वातावरण में मौजूद कई तरह के जीवाणुओं– कीटाणुओं का नाश होता है। डॉ.रवि मौहन ने बताया कि रोज शंख बजाने से दिमाग में खून का संचार ठीक से होता है।

ग्रुप की वरिष्ठ सदस्य ज्योति गुप्ता ने कहा कि नियमित शंख बाजाने से शरीर के अंदरूनी अंगों की एक्सरसाइज होती है। ग्रुप संचालक अभिनय गुप्ता ने बताया कि शंख बजाने से दुष्ट आत्माएं पास नहीं फटकती हैं। इस दौरान आरएसएस के विभाग प्रचारक धर्मेंद्र, भाजपा महानगर अध्यक्ष अरुण गुप्ता, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अजय प्रताप यादव, हरिशरण बाजपेयी, डॉ.हेमेंद्र वर्मा, अनिल गुप्ता प्रधान, अजय गुप्ता आढ़ती, कुलदीप गुप्ता, शाहनवाज खां, प्रदीप सक्सेना, आलोक मिश्रा, वैभव खन्ना, तराना जमाल, डॉ. संगीता मोहन, डॉ.दीपा दीक्षित, डॉ. दीपा सक्सेना, वर्षा अवस्थी, गीता त्रिवेदी, नलिनी ओमर, सोनी शंखवार, प्रीति राज, काजल यादव, संध्या गुप्ता, स्तुति गुप्ता, रजनी गुप्ता आदि मौजूद रहे।

प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित होगी ग्राम पंचायत भटपुरा रसूलपुर

प्रधान अनिल गुप्ता ने गिनाई उपलब्धियां

लोक पहल

शाहजहांपुर। मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के तहत शाहजहांपुर की 5 ग्राम पंचायतों का चयन हुआ है, जिसमें ब्लांक सिधौली की ग्राम पंचायत भटपुरा रसूलपुर को पहला स्थान प्राप्त हुआ है दितीय स्थान पर ददरौल विकास खण्ड की ग्राम पंचायत बलेली, तीसरे चौथे स्थान पर विकास खण्ड भावल खेड़ा की डींगरपुर व रामापुर बरकतपुर एवं पांचवे स्थान पर विकास खण्ड कांट की कुरिया कला रही। इन ग्राम पंचायतों को पुरस्कार के रूप में क्रमशः 11 लाख, 9 लाख, छः लाख, चार लाख, दो लाख की धनराशि प्राप्त हुई है और इन ग्राम पंचायतों को जल्द ही प्रदेश स्तर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के द्वारा सम्मानित किया जाएगा ।

शहर के सत्यम होटल में प्रेस वार्ता के दौरान प्रधान अनिल कुमार गुप्ता ने कहा कि हमारी पंचायत के सहायक विकास अधिकारी, खंड विकास अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी एवं जिला अधिकारी की प्रेरणा व सहयोग से यह कार्य संपन्न हो पाया है। हमारे सभी साथियों को अपनी ग्राम पंचायत में इसी प्रकार से विकास कार्य कराना चाहिए। हम अपने सभी साथियों को सदैव सहयोग देने के लिए तत्पर हैं। प्रेसवार्ता के दारौन अनिल कुमार गुप्ता के साथ–साथ खंड विकास अधिकारी खुशीराम भार्गव, पंचायत सहायक अधिकारी आदित्य सक्सेना, ग्राम विकास अधिकारी राकेश कुमार एवं राष्ट्रीय पंचायती राज प्रधान संगठन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजीत कुमार मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश में अब एक कॉल पर मिलेगा पशुधन को इलाज

मुख्यमंत्री ने वेटरनरी मोबाइल वैन को दिखाई हरी झंडी

लोक पहल

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण योजना पशुधन के क्षेत्र में नए युग का सूत्रपात है। उन्होंने कहा कि 520 मोबाइल वेटरनरी वैन आज से प्रदेश के सभी जनपदों में पशुपालकों के लिए उपलब्ध रहेंगी। हम लोग देखते थे कि कोई जानवर बीमार हैं तो उसे समय पर इलाज नहीं मिल पाता था। किसी गोवंश का एक्सिडेंट हो जाता था तो समय पर उसे डॉक्टर नहीं मिल पाते थे। इससे उन पशुओं का इलाज हो पाएगा। यह योजना वास्तव में उत्तर प्रदेश के पशुधन संरक्षण और संवर्धन के नए अध्याय की शुरुआत है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से पिछले छह वर्ष में हमारी सरकार ने गोवंश के संरक्षण और संवर्धन में अनेक प्रयास किए हैं। अन्नदाता किसानों के जीवन में परिवर्तन हो, उनकी आमदनी बढ़े इसके लिए तो प्रयास हुए ही साथ ही साथ किसानों की फसलों को भी सुरक्षित रखने के लिए प्रदेश के पशुधन विभाग द्वारा अनेक कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए, जिनकी लंबी शृंखला है।

मुख्यमंत्री योगी ने भारत सरकार के सहयोग से शुरू हुई पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण योजना के अंतर्गत 201 करोड़ रूपए की लागत से 520 मोबाइल वेटरनरी यूनिट के फ्लैग ऑफ कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के साथ मिलकर पशुओं के नस्ल सुधार के एक बड़े अभियान को हम लोग आगे बढ़ा रहे हैं। निराश्रित गोवंश के संरक्षण के 6 हजार 600 से अधिक आश्रय स्थल प्रदेश में स्थापित किए गए हैं।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि आजादी के बाद किसी ने सोचा नहीं होगा कि यहां के पशुपालकों द्वारा उत्पादित होने वाले दुग्ध को वैश्विक बाजार में स्थान क्यों नहीं मिल पा रहा है। उसका कारण था बीमार पशुओं के दुग्ध के नमूने फेल हो जाते थे। यह पहली बार हुआ है जब खुरपका और मुंहपका जैसी बीमारी को समाप्त करके मूक जीवों को संरक्षण देने कार्य किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रदेश के गंगा के तटवर्ती 27 जनपदों में हम गो–आधारित प्राकृतिक और जैविक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं।

केंद्रीय पशुधन, मत्स्य एवं डेयरी मंत्रालय के मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला ने कहा कि पशुओं के स्वास्थ्य के लिए शुरू की गई मोबाइल वेटरनरी यूनिट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का महत्वपूर्ण निर्णय है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश ऐसा राज्य है जहां सभी जनपदों में अगर कोई योजना लागू हो जाती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे देश में लागू हो गई है। जनपदों में सभी मोबाइल वेटरनरी यूनिट हाइब्रिड मॉडल पर संचालित होंगी जो देश में अपने तरह का अनूठा मॉडल है। जनपद में 50 प्रतिशत वाहन निर्धारित रूट पर चलेंगे, जबकि 50 प्रतिशत वाहन इमरजेंसी सेवाओं के लिए टोल फ्री नंबर 1962 के माध्यम से संचालित होंगे।

सामाजिक समरसता: नवरात्र में दलित कन्याओं का पूजन कराएगा संघ

लोक पहल

लखनऊ। देश में सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए आरएसएस ने विभिन्न योजनाओं पर काम करना शुरू कर दिया है। फिलहाल नवरात्रि पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ सामाजिक समरसता कार्यक्रम के तहत दलित कन्याओं के पूजन का कार्यक्रम शुरू कराएगा। खासतौर पर वाल्मीकि समाज की बेटियों का सामूहिक पूजन कराया जाएगा। संघ ने दलित और पिछड़े वर्ग में पैठ बनाने के लिए सामाजिक समरसता कार्यक्रम शुरू किए हैं। चैत्र नवरात्र में गांवों में समाज के प्रमुख और प्रभावशाली लोगों के जरिए दलित कन्याओं के सामूहिक पूजन के कार्यक्रम का आयोजन होगा।

यूं तो कन्या पूजन में सभी जातियों की बेटियों को शामिल किया जाएगा। लेकिन वाल्मीकि समाज की कन्याओं के पूजन पर सबसे ज्यादा ध्यान देने की रणनीति है।

दलित कन्याओं को गोद लेने के भी कार्यक्रम होंगे। इसके तहत समाज के प्रबुद्ध वर्ग लोगों को दलित बेटियों की शिक्षा, वस्त्र, स्वास्थ्य, विवाह की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

इसके जरिए संदेश देने की कोशिश है कि संघ छूआछूत और भेदभाव के खिलाफ समरस समाज की स्थापना करना चाहता है। ऐसे कार्यक्रमों से दलित वर्ग के लोगों को संघ की किसी न किसी गतिविधि से जोड़कर विचारधारा और रीति–नीति से अवगत कराएंगे। रामनवमी के दिन जगह–जगह राम जन्मोत्सव के कार्यक्रम भी होंगे। डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती पर भी 14 अप्रैल को संघ की ओर से अवध प्रांत के गांवों में संगोष्ठी का आयोजन होगा व सफाई कर्मियों को सम्मानित भी किया जायेगा।

राहुल गांधी के मुद्दे को हर ब्लाक, हर गांव तक पहुंचायेगी कांग्रेस

लोक पहल

लखनऊ। राजघाट पर संकल्प सत्याग्रह में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की संसद सदस्यता जाने के मुद्दे पर प्रियंका गांधी वाड्रा के बयान को कांग्रेस गांव–गांव तक पहुंचाएगी। इसके लिए ब्लॉक स्तर पर बैठकें और नुक्कड़ सभाएं करने का फैसला किया गया है। सभी जिला व शहर कमेटियों को इस बारे में निर्देश दे दिए गए हैं।

कांग्रेस का कहना है कि राहुल गांधी अदाणी ग्रुप मामले की संयुक्त संसदीय समिति से जांच की मांग कर रहे थे। वे इस मुद्दे पर लगातार सरकार पर हमलावर हैं, इसलिए उनकी लोकसभा की सदस्यता खत्म की गई। प्रदेश कांग्रेस कमेटी की रणनीति के अनुसार, इस मुद्दे पर चुप नहीं बैठा जाएगा।

एलआईसी और एसबीआई में आम जनता की गाढ़ी कमाई है, इसे अदाणी ग्रुप में लगाने के फैसले को उचित नहीं ठहराया जा सकता। इसलिए इस मुद्दे को गांव–गांव तक पहुंचाने के लिए ब्लॉक स्तर पर बैठकों और नुक्कड़ सभाओं का आयोजन होगा। इसमें पार्टी के वरिष्ठ नेता भी हिस्सा लेंगे।

सपा ने घोषित किए 32 जिलाध्यक्ष, एफवाई फैक्टर पर भी निगाहें

शाहजहांपुर में एक बार पुनः तनवीर खां की ताजपोशी

लोक पहल

लखनऊ। समाजवादी पार्टी ने काफी दिनों बाद अपने संगठन को मजबूत के लिए जिलाध्यक्षों के नियुक्ति करना आरंभ कर दिया है। फिलहाल पार्टी ने 32 जिलों के जिलाध्यक्षों की सूची जारी की है। लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुटी समाजवादी पार्टी ने 32 जिलों के जिलाध्यक्षों की घोषणा कर दी है। इसमें एमवाई फैक्टर का ध्यान रखते हुए अति पिछड़ों पर जोर दिया गया है। अवध क्षेत्र में अंबेडकर नगर का जिलाध्यक्ष जंग बहादुर यादव को बनाया गया है।

प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने 32 जिलों के जिलाध्यक्षों में जातीय समीकरण का पूरा ध्यान रखा है। सूची में परंपरागत वोटबैंक को संतुष्ट करने की भरसक कोशिश है। शाहजहांपुर से तमाम विरोध के बाद भी सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने पूर्व जिलाध्यक्ष तनवीर खां पर विश्वास जताते हुए एक बार पुनः जिले की कमान सौंपी है।

कानपुर का जिलाध्यक्ष मुनींद्र शुक्ला को बनाया गया तो महानगर अध्यक्ष की जिम्मेदारी फजल महमूद को दी गई है। इसी तह एटा का जिलाध्यक्ष परवेज जुबेरी को बनाते हुए महासचिव की जिम्मेदारी भूपेंद्र प्रजापति को सौंपी गई है। अमरोहा में जिलाध्यक्ष मस्तराम बनाए गए हैं तो जिला महासचिव की जिम्मेदारी चंद्रपाल सैनी को सौंपी गई है। इन जिलों में पार्टी ने साफ संकेत दिया है कि सभी जातियों को पार्टी किसी किसी रूप में सम्मान देने के

लिए तैयार है।

समाजवादी पार्टी लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुट गई है। पार्टी ने 32 लोकसभा क्षेत्रों के प्रभारी बना दिए हैं। इसमें बसपा से बायां भाजपा होते हुए सपा में आने वाले नेताओं को बड़ी जिम्मेदारी दी गई है। सपा के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल की ओर से जारी सूची में फैजाबाद लोकसभा क्षेत्र की कमान विधायक अवधेश प्रसाद को सौंपी गई है।

बसपा से भाजपा होते हुए सपा में आने वाले विधायक रामअचल राजभर को अंबेडकर नगर, घोसी, गाजीपुर, बलिया लोकसभा क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गई है। विधायक लालजी वर्मा को आजमगढ़, लालगंज, मछलीशहर और जौनपुर का प्रभारी बनाया गया है। इसी तरह विधायक राममूर्ति वर्मा को श्रावस्ती और गोंडा की जिम्मेदारी दी गई है। राजाराम पाल को झांसी, जालौन, हमीरपुर, कानपुर, अकबरपुर रनिया का प्रभारी बनाया गया है।

इसके अलावा राम प्रसाद चौधरी को बस्ती,शिवशंकर सिंह पटेल को बांदा, अगम मौर्य को आंवला, देवेश शाक्य को एटा, अक्षय यादव को फिरोजाबाद, रमाशंकर विद्यार्थी को सलेमपुर का प्रभारी बनाया गया है। संत कबीर नगर की जिम्मेदारी लक्ष्मीकांत पप्पू निषाद, सुनील सिंह, संतोष यादव सनी को सौंपी गई है। वीरपाल सिंह यादव को बरेली और पीलीभीत, रामजी लाल सुमन को आगरा, हाथरस, फतेहपुर सीकरी का प्रभारी बनाया गया है। हरेंद्र मलिक को मुजफ्फरनगर, प्रमोद त्यागी को गाजियाबाद, वीर सिंह को गौतमबुद्ध नगर और अनु टंडन को उन्नाव की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

उत्तर प्रदेश में अब बैंक एटीएम की तर्ज पर लगेंगे अनाज एटीएम

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने आम जनता को सुविधा देने के लिए एक और क्रांतिकारी योजना शुरू की है। अब उत्तर प्रदेश में बैंक एटीएम की तर्ज पर अनाज एटीएम लगेंगे। राज्य सरकार राशन वितरण में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए इस पर विचार कर रही है। इस बारे में उच्च स्तर पर प्रजेंटेशन हो चुका है।

वाराणसी, गोरखपुर और लखनऊ में सरकारी कोटे की दुकानों पर पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर ऑटोमेटेड मल्टी कॉमोडिटी ग्रेन डिस्पेंसिंग सॉल्यूशन यानी अनाज एटीएम लगाए गए हैं। इनको सीधे ई–पॉस मशीन से जोड़ा गया है। पुरानी व्यवस्था में कोटे की दुकान पर लगी ई–पॉस मशीन पर कार्डधारक का अंगूठा लगने के बाद एक पर्ची निकलती है। उसके बाद उसे मैनुअली तौलकर अनाज या अन्य चीजें दी जाती हैं।

अनाज एटीएम लगने पर मैनुअली तौल करने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। जैसे ही ई–पॉस मशीन पर कार्डधारक का अंगूठा लगता है, कार्डधारक अनाज एटीएम के नीचे अपना झोला लगाकर अनाज ले लेता है। उसे कितना अनाज मिला, इसकी जानकारी भी एटीएम से निकलने वाली पर्ची से मिल जाती है। इस प्रयोग को बड़े पैमाने पर करने पर विचार किया जा रहा है। व्यवस्था प्रभावी हुई तो राशन वितरण में होने वाले भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगेगा।

वर्तमान में अनाज एटीएम खुले बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध नहीं हैं। इन्हें यूएन वर्ल्ड फूड प्रोग्राम की ओर से मुहैया कराया गया है। एक अनाज एटीएम की कीमत 15–18 लाख रुपये बताई जाती है। उच्चस्तर पर हुए प्रस्तुतीकरण के अनुसार, अगर मौजूदा अनाज एटीएम को थोड़ा मॉडीफाई करके इनका व्यावसायिक उत्पादन हो तो इनके निर्माण की लागत और बाजार मूल्य काफी कम हो सकणी है। अनाज एटीएम में तीन हिस्से होने चाहिए, जोकि कमांड मिलने पर गेहूं व चावल के साथ–साथ चीनी भी निकाल सकें। साथ ही रिफिल की वर्तमान में 5 क्विंटल की क्षमता को बढ़ाकर न्यूनतम 50 क्विंटल करना होगा।

शासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि खुले बाजार में अनाज एटीएम के उत्पादन से रेट कम होने पर इनका उपयोग बैंक एटीएम की तरह किया जा सकेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

डिंपल को दीवानगी की हद तक चाहने लगे थे सनी देओल?

साथ में फिल्में करते हुए असर फिल्मी सितारे एक-दूसरे के प्यार में पड़ जाते हैं। इसके कई उदाहरण बॉलीवुड में हैं। मगर, कुछ लव स्टोरी ऐसी हैं, जो बिल्कुल फिल्मी लगती हैं। कुछ ऐसी ही प्रेम कहानी सनी देओल और डिंपल कपाड़िया की बताई जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों चर्चित स्टार्स दीवानगी की हद तक एक-दूसरे से प्यार करने लगे थे। ऐसा माना जाता है कि सनी देओल और डिंपल कपाड़िया के बीच फिल्म बेताब की शूटिंग के दौरान नजदीकियां बढ़ीं। इसके बाद सनी और डिंपल ने फिल्म मंजिल-मंजिल, आग का गोला, गुनाह, नरसिा जैसी फिल्मों में साथ काम किया। फिल्मों में दोनों की जोड़ी दर्शकों को भी खूब पसंद आई। दरअसल, यह वह दौर था, जब डिंपल शादी और मां बनने के बाद फिल्मों में कमबैक कर चुकी थीं। राजेश खन्ना से शादी और फिर बेटियों-ट्विंकल और रिंकी के जन्म के बाद डिंपल ने फिल्मी दुनिया में लौटने का फैसला किया था। उन्होंने राजेश खन्ना के खिलाफ जाकर कमबैक करने की ठानी थी। हालांकि, वह शादी के कुछ वर्षों बाद ही राजेश खन्ना से अलग हो गई थीं, योंकि राजेश खन्ना नहीं चाहते थे कि डिंपल शादी के बाद फिल्मों में काम करें। काका का मानना था कि डिंपल घर और बच्चों की जिदारी संभालें। मगर, डिंपल कपाड़िया को मंजूर नहीं था। राजेश खन्ना से वैचारिक मतभेद के बाद डिंपल कंपाड़िया ने उनसे अलग रहने का फैसला कर लिया था। इसी बीच सनी देओल से नजदीकी के चलते डिंपल काफी सुर्खियों में आ गई थीं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सनी जब डिंपल से मिलने उनके घर जाया करते थे तो उनकी दोनों बेटियों से भी एटर की काफी अच्छी बॉन्डिंग हो गई थी।

कार्तिक की मुरीद हुई सारा

कहा-आर्यन को दर्शकों की अच्छी है पहचान

बॉलीवुड | मसाला

कार्तिक आर्यन ने आउट-साइडर होते हुए भी मनोरंजन जगत में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। लंबा रास्ता तय करते हुए कार्तिक आज अपनी एटिंग से दर्शकों के दिलों पर छा चुके हैं। कार्तिक की फैन-फॉलोइंग दिन दोगुनी-रात चौगुनी बढोतरी हो रही है। दर्शकों के स्वाद के बारे में कार्तिक का ज्ञान काफी मायने रखता है, यह सारे कारण हैं कि सारा अली खान भी कार्तिक को लेकर यही राय रखती हैं। सारा अली खान इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म गैसलाइट के प्रमोशन में व्यस्त हैं। इसी को लेकर एट्रेस ने अपने लेटेस्ट इंटरव्यू में प्रोफेशनल और पर्सनल दोनों लाइफ से जुड़ीं कई दिलचस्प बातें साझा कीं। हालिया इंटरव्यू में सारा अली खान ने कार्तिक आर्यन के ऑडियंस चुनाव वाली लिटी की दिल खोलकर तारीफ की। एट्रेस ने कहा, ईमानदारी से कहूं तो मुझे अभी तक कोई ऐसा नहीं मिला है जो हमारे दर्शकों की न को अच्छी तरह से जानता हो। सारा अली खान के इस बयान से दोनों के फैंस बेहद खुश हो गए हैं। सारा ने साफ कर दिया है कि कार्तिक को दर्शकों की अच्छी पहचान है, साथ ही वो या देखना पसंद करते हैं इसे भी एटर बखूबी जानते हैं। इसका नतीजा भी साफ देखने को मिलता है। देश से लेकर विदेश तक में कार्तिक के फैंस उनकी एक झलक पाने के लिए बेहद एसाइटेड नजर आते हैं। साथ ही कार्तिक जब भी आउटिंग पर जाते हैं, फैंस उनके साथ तस्वीर लिक कराने के लिए लाइन लगा लेते हैं।

सिद्धार्थ बोले- फाइटर में दिखेगा दीपिका पादुकोण का क्रेजी अवतार

फिल्म पठान की जबरदस्त सफलता के बाद अब निर्देशक सिद्धार्थ आनंद इन दिनों अपनी आगामी फिल्म फाइटर में जुटे हुए हैं। फिल्म की शूटिंग हो चुकी है। बता दें कि पठान में अपने एशन का दम दिखाने वाली दीपिका पादुकोण फिल्म फाइटर में भी नजर आने वाली हैं। इस फिल्म में भी उनका एशन अवतार देखने को मिलेगा। हाल ही में सिद्धार्थ आनंद ने दीपिका पादुकोण की तारीफों के पुल बांधे हैं।

पठान के बाद फाइटर में भी उनका दिखेगा एशन अवतार

सिद्धार्थ आनंद ने कहा, हमने हाल ही में फिल्म का तीसरा शेड्यूल पूरा किया है। पहला शेड्यूल असम में पूरा हुआ, दूसरा कश्मीर में और आखिरी हैदराबाद में हुआ है। हम इस फिल्म के जरिए कुछ बेहद खास क्रिएट करने की यात्रा पर हैं। फिल्म में दीपिका की मौजूदगी पर बात करते हुए सिद्धार्थ आनंद ने कहा, फिल्म फाइटर में दीपिका का बिल्कुल अलग ही अवतार देखने को मिलेगा। सिद्धार्थ ने आगे कहा, पठान में वह एक स्पाई रोल में थीं, वहीं फाइटर में वह एयरफोर्स ऑफिसर के रोल में हैं। वह एक शानदार रोल अदा कर रही हैं। एट्रेस की तारीफ करते हुए सिद्धार्थ ने आगे कहा, दीपिका रियल लाइफ कैरेट हैं। मैं फिल्म में या चाहता हूं, वह इशारों से ही समझ जाते हैं। एक एटर और डायरेटर के बीच इस तरह की समझ और एनर्जी काफी स्पेशल है। उीद है कि फैंस बेहद खूबसूरती से अदा करती हैं। फाइटर में वह कई एशन और क्रेजी सीन करती नजर आएंगी। बता दें कि दीपिका पादुकोण इस फिल्म में ऋतिक रोशन के साथ स्क्रीन शेयर करती दिखेंगी। सिद्धार्थ आनंद ने दीपिका के अलावा ऋतिक को लेकर भी बात की। फिल्म के निर्देशक से जब ऋतिक के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, ऋतिक रोशन मेरे लिए बेहद स्पेशल हैं। हम पिछले दस वर्षों से साथ काम करते आ रहे हैं। हमारे बीच काफी अलग अंडरस्टैंडिंग है। मैं फिल्म में या चाहता हूं, वह इशारों से ही समझ जाते हैं। एक एटर और डायरेटर के बीच इस तरह की समझ और एनर्जी काफी स्पेशल है। उीद है कि फैंस यह फिल्म पसंद आएगी।

अजब-गजब | मौत के बाद नर्क पहुंच गया श

चार घंटे बाद फिर हुआ जिंदा

आपने कई ऐसे किस्से सुने होंगे, जिनमें कई लोगों ने दावे किए कि वे मौत के बाद जिंदा हो गए और उन्होंने मौत के बाद के अपने अनुभव साझा किए। इनमें से कई लोगों ने अलग अलग अनुभव शेयर किए। कुछ लोगों का कहना था कि मरने के बाद वे कुछ देर तक स्वर्ग में रहे और वापस आ गए। कई लोगों ने कहा कि उन्होंने तेज रोशनी देखी। अब एक व्यक्ति ने भी ऐसा ही दावा किया है लेकिन उसका अनुभव थोड़ा अलग है। इस व्यक्ति का दावा है कि मरने के बाद वह नर्क गया था।

एक की रिपोर्ट के मुताबिक एक श ने दावा किया है कि मरने के बाद उसे नर्क ले जाया गया। यह श अपने अजीबोगरीब दावे की वजह से इन दिनों सुर्खियों में है। युवक के अनुसार, मरने के बाद उसे सीधे नर्क ले जाया गया, जहां उसकी मुलाकात शैतानों से हुई। इस श के दावे वाकई हैरान कर देने वाले हैं। हालांकि विज्ञान मृत्यु के बाद किसी जीवन की संभावना को नहीं मानता। डॉटर ने टिकटॉक पर बताया कि 20 साल की उम्र के एक युवक को एक ड्रग डील में शामिल होने के बाद दिल में छुरा घोंपा गया था। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉटर्स उसे बचाने का पूरा प्रयास कर रहे थे। उसे ऑपरेशन थियेटर में ले जाया गया। वहां उसका इलाज चल रहा था। 4 घंटे बाद जब उसे होश आया तो श काफी डरा हुआ था। डॉटर ने बताया कि जब श को होश आया तो उसने रोते हुए बताया कि वो सीधा नर्क में पहुंच गया था। युवक बुरी तरह से घबराया हुआ था और उसकी आंखों में खौफ था। उसका कहना था कि उसने शैतान को देखा, जो काफी डरावना था। घबराते हुए जब उसने भगवान से प्रार्थना की तो स्वर्ग के दूत उसे नर्क से बाहर निकालकर लाए। डॉटर का कहना था कि ये अनुभव अलग था योंकि नर्क को लेकर कोई बात नहीं करता और युवक की आंखों में डर भी था। हो सकता है कि श ने शैतान का डर महसूस किया हो। इस घटना के बाद उस श की जिंदगी पूरी तरह से बदल गई। उसने सभी गलत काम छोड़ दिए और अपना पूरा जीवन भगवान के लिए समर्पित कर दिया। बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब किसी ने इस तरह का दावा किया हो। इससे पहले भी कई लोगों ने इस बारे में बताया है कि उन्हें धरती से निकलकर किसी और दुनिया में जाने का अनुभव हुआ था।

बोरे की तरह पीठ पर लाद लिया मगरमच्छ, फिर की चहलकदमी

सोशल मीडिया पर मगरमच्छ से जुड़े असर ही आपने बहुत से वीडियो देखे होंगे। जिससे इतना तो समझ में आ गया होगा कि मगरमच्छ कितना खूंखार और खतरनाक जानवर होता है अपने मजबूत और विशाल जबड़ों में एक बार किसी को जकड़ लें, तो छुड़ाना मुश्किल होता है। उसे अपने करीब देख थर थर कांपते हैं लोग। लेकिन एक बच्चे की दिलेरी देखकर आप सन्न रह जाएंगे, जो मगरमच्छ को देखकर भागने की बजाय उसे पीठ पर लादकर घूमता दिखाई दिया। एक वीडियो में छोटा सा बच्चा अपनी पीठ पर मगरमच्छ को लादकर घूमता दिखाई दिया। इस दौरान बच्चे का अंदाज कुछ ऐसा था मानो पीठ पर स्कूल का बैग टांगकर घूम रहा हो। ना डर, ना घबराहट बिल्कुल बिंदास था बच्चा आप भी देखिए वीडियो। सोशल मीडिया पर एक बच्चे का वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है जिसे मगरमच्छ के साथ इतना बेफिक्र देखकर लोग हैरान भी थे और उनके रोंगटे भी खड़े हो रहे थे। जिस मगरमच्छ को देखते ही लोगों की सांसे फूलने लगती है, उसे बच्चे ने अपनी पीठ पर दोनों हाथों से पकड़कर टांग रखा था। वीडियो देखकर आप बखूबी समझ सकते हैं कि वो मगरमच्छ ना तो बेहोश था ना मरा हुआ और न ही कोई खिलौना बल्कि वो पानी में रहने वाला जीता जागता शिकारी था जो शेर का शिकार भी आसानी से कर लेता है। कहते हैं कि जानवर बच्चों के साथ खतरनाक रवैया नहीं अपनाते और वीडियो में तो दोनों के दोनों बच्चे ही है शायद इसलिए वे एक दूसरे को कोई नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं। कई यूजर्स ने वीडियो पर लिखा कि बच्चा इस मगरमच्छ को डिनर की तैयारी के लिए ले जा रहा है तो कुछ ने मज़ाकिया अंदाज में लिखा कि शायद ये घड़ियाल बच्चे से कह रहा होगा की प्लीज़ मुझे छोड़ दो मुझे पानी में जाना है हम बाद में खेलेंगे। वीडियो में लोग बच्चे की हित की देखकर बेहद हैरान हो रहे हैं।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।